माननीय जल शक्ति मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत जी ने श्री आर.के. अग्रवाल, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस को वाटर डाइजेस्ट अवार्ड प्रदान किया

ISO 9001:2015

वाप्कोस दर्पण

अंक 104, जनवरी से मार्च, 2022

श्री गजेंद्र सिंह शेखावत, माननीय मंत्री, जल शक्ति को श्री आर.के. अग्रवाल, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस और एनपीसीसी द्वारा वर्ष 2020-21 के लिए लाभांश चैक भेंट किया

माननीय मंत्री जी द्वारा वाप्कोस मासिक न्यूजलेटर शीर्षक "ई-संचार" और "बिल्डिंग निर्माण हेतु गुणवत्ता नियंत्रण मैनुअल" का विमोचन किया गया

वाप्कोस दर्पण

अंक 104 जनवरी-मार्च, 2022

संरक्षक
आर. के. अग्रवाल
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

सह-संरक्षक
अनुपम मिश्रा
निदेशक (वाणि. व मा.सं.वि.)
एवं अध्यक्ष, विराकास

मुख्य संपादक
प्रेम प्रकाश भारद्वाज
प्रमुख (कार्मिक व रा.भा.का.)

संपादक
दलीप कुमार सेठी
उप मुख्य प्रबंधक (रा.भा.का.)

सहयोग
शारदा रानी
वरिष्ठ सहायक

(पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने हैं। संपादन मण्डल का इसके लिए सहमत होना अनिवार्य नहीं है।)

केवल आन्तरिक वितरण हेतु

इस अंक में	पृष्ठ सं.
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक की कलम से	2
सम्बोधन	3
सम्पादकीय	4
हिन्दी का आकाश	5
माननीय जल शक्ति मंत्री, भारत सरकार द्वारा जोधपुर जिले...	11
नारी की पहचान-कविता	12
स्वर्णकुमारी देवी	13
हिन्दी भाषा-कविता	15
कोर्नेलिया सोराबजी	16
एक चोर की मौत-कहानी	18
राजभाषा गतिविधियां	25
महिला सुरक्षा - एक पहल	26
वाप्कोस गुरूग्राम कार्यालय में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन	28
विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक	29
नर्मदा नदी में बड़वानी प्वाइंट से स्टैच्यू ऑफ यूनिटी तक क्रूज...	31
उड़े तिरंगा-कविता	34
स्वच्छता अभियान 2022	35
अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2022	37
साहसी-कविता	38
माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा...	39
वाप्कोस के लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय में हिंदी कायर्शाला...	40
अपर इंद्रावती पंप स्टोरेज परियोजना	41
मॉनीटरिंग, इवैल्यूएशन, लर्निंग एंड डेवलपमेंट...	43
नारी शिक्षा	46
जल जीवन मिशन	48
पर्यावरण का संरक्षण-कविता	49
26 जनवरी के उपलक्ष्य में बच्चे के मुख से प्रस्तुत की गई कविता	50
कभी माँ को भी ये घर मायका सा लगने दो-कविता	51
हिम्मत-कविता	52
पानी के बारे में कुछ रोचक तथ्य	52

अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक की कलम से

वाप्कोस की त्रैमासिक गृह पत्रिका "वाप्कोस दर्पण" के आगामी अंक 104 के जरिए अपने विचार आप सभी के साथ साझा करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। भारत में हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो आम जनता की संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने में पूरी तरह से समर्थ है। हिंदी के माध्यम से ही सब भारतवासी एक सूत्र में बंधे हुए हैं। हमें हिंदी के साथ-साथ देश के विभिन्न प्रांतों की क्षेत्रीय भाषाओं का भी सम्मान करना चाहिए।

हिंदी का सरल और प्रवाहमान स्वरूप ही व्यवहार में सहज लगता है इसलिए शुद्धता का आग्रह छोड़कर हमें बोलचाल की भाषा को राजकाज की भाषा बनाना है। आईटी के क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने की बात काफी समय से महसूस की जाती रही है। आज बड़ी संख्या में ऐसे सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं जिनकी सहायता से हर वह काम हिंदी में किया जा सकता है जो अब तक केवल अंग्रेजी में ही किया जाता रहा है।

आवश्यक जानकारियां व ज्ञान उपलब्ध कराने में वेबसाइटों की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसलिए हम सबका यह नैतिक उत्तरदायित्व हो जाता है कि हम आधुनिक उपकरणों का प्रयोग करके हिंदी को आगे बढ़ाने में अपना ज्यादा से ज्यादा योगदान दें ताकि गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम में दिये गए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

शुभ कामनाओं सहित,

आर.के. अग्रवाल
अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक

सम्बोधन

हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसके सहज और स्वाभाविक प्रयास ने उसे देश की राजभाषा बना दिया है। वह केवल हमारे देश की संपर्क भाषा ही नहीं बल्कि इससे बढ़ कर वह आज जन मानस की मूल भाषा बन गई है। संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की ताकत किसी अन्य भाषा या अंग्रेजी से उसकी तुलना से नहीं बल्कि उसकी उपयोगिता से ही तय होगी। हिंदी विश्व की सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है।

सृष्टि के आरंभ से ही मानव विचारों एवं भावनाओं का आदान-प्रदान और प्रसार अभिव्यक्ति से ही होता है। इन विचारों को अभिव्यक्त करने का सबसे असरदार और प्रबल माध्यम है हिंदी, जो पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक देश को एक जुट कर एक महत्वपूर्ण पहचान देने में समर्थ है। हिंदी पूर्ण रूप से समर्थ और सक्षम भाषा है जो हमारे देश में सबसे ज्यादा बोली व समझी जाती है। हिंदी स्नेह, सहानुभूति, सहयोग और संवेदना की भाषा है और यही वजह है कि आम बोलचाल और संपर्क की भाषा के रूप में हिंदी का प्रचार एवं प्रसार बढ़ता ही जा रहा है।

संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है। इसलिए हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करना हम सभी का उत्तरदायित्व है। राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने में विभागीय पत्रिकाओं की बहुत अहम भूमिका होती है जिससे हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए अनुकूल वातावरण भी बनता है।

हार्दिक शुभकामनाएं,

अनुपम मिश्रा

अनुपम मिश्रा
निदेशक (वा.व मा.सं.वि.) एवं
अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति

संपादकीय

संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है। इसलिए हम सभी को अपने-अपने कार्यक्षेत्र में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाते हुए अधिक से अधिक सरकारी कामकाज राजभाषा हिंदी में ही करना चाहिए। भाषा केवल मनोभावों की वाहिका ही नहीं होती बल्कि देश की संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों के निर्माण का महत्वपूर्ण साधन होने के साथ-साथ देश की एकता और अखंडता की एक महत्वपूर्ण कड़ी भी होती है।

भारत में हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसने विविधता में एकता स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आर्थिक उदारीकरण और वैश्वीकरण के दौर में हिंदी का महत्व समय के साथ बढ़ता जा रहा है कार्यालयों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने में विभागीय पत्रिकाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है जिससे हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए अनुकूल वातावरण बनता है।

आइए, हम सब मिलकर प्रण करें कि हम सब एकजुट होकर हिंदी की वैभवता और सम्पन्नता को ऊंचाईयों की ओर ले जाएंगे। इसके लिए किसी विशेष प्रयास की आवश्यकता नहीं है बस दिल से हम सभी उत्साहपूर्वक और गर्व के साथ आज से ही अपने कार्यालय का कामकाज हिंदी में करना शुरु करें और हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना पूरा योगदान दें।

प्रेम प्रकाश भारद्वाज
प्रमुख (कार्मिक व रा.भा.का.)

हिंदी का आकाश

साभार: राजभाषा भारती

धरती से आकाश तक हिंदी! हिंदी!! हिंदी!!! यह नारा एअर इंडिया ने राजभाषा की स्वर्ण जयंती पर दिया था और इसे चरितार्थ होते देखा था लंदन के विश्व हिंदी सम्मेलन में भाग लेने जा रहे साहित्यकारों के दल ने जब डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी की अध्यक्षता में तथा डॉ. अशोक चक्रधार के संचालनकत्व में उड़ते हुए विमान में एक कवि सम्मेलन सम्पन्न किया था। ऐसा पहली बार नहीं हुआ था। इस परम्परा का सूत्रपात वर्षों पूर्व द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलन में भाग लेने जाते समय मॉरीशस पहुंचने से पहले हवाई यात्रा में डॉ. कर्णसिंह कर चुके थे... जिसका संचालन डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' ने किया था... हवाई यात्राएं जारी हैं... हिंदी यात्रा जारी है। वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, हिंदवी, खड़ी बोली आदि की यात्राएं कर हिंदी अपने आज के स्थान तक पहुंची है। विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली या प्रयोग की जाने वाली भाषाओं में हिंदी अग्रणी है। भारत के अतिरिक्त राज-काज या कार्यालयी भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग मॉरीशस, फीजी, सूरीनाम, त्रिनिडाड, गुयाना, नेपाल आदि अनेक देशों में भी मान्य है। जहां ऐसी मान्यता नहीं है, ऐसे विश्व के अनेकानेक देशों में हिंदी का प्रयोग व्यवसाय, शिक्षा या सांस्कृतिक सरोकारों आदि के रूप में किया जाता है। ऐसे देशों में दो करोड़ से अधिक प्रवासी और अनिवासी भारतीय हैं, जो इन प्रयोगों का दायित्व वहन कर रहे हैं।

भारत से बाहर रहने वाले भारतीयों के प्राय: चार वर्ग माने जाते हैं, जो भारतीय भाषाओं के राजदूत हैं। प्रथम वर्ग में वे भारतवासी हैं जो ढाई हजार वर्ष पूर्व से धर्म-प्रचारकों के रूप में गए। द्वितीय वर्ग उन भारतीयों का है, जो गिरमिटियों के रूप में (एग्रीमेंट या शर्त बंदी प्रथा के अन्तर्गत) फिजी, मॉरीशस, त्रिनिडाड, गियाना, सूरीनाम, ग्वाटालूप, दक्षिण अफ्रीका, मार्टिनी, जमैका आदि देशों में गए। तृतीय वर्ग में वे भारतीय हैं, जो रोज़ी-रोटी कमाने अमेरिका, इंग्लैंड, कनाडा, आस्ट्रेलिया आदि देशों में जा बसे। चतुर्थ वर्ग ऐसे भारतीयों का रहा है जो शिक्षा, प्रशिक्षण, भारतीय राजकीय सेवा या विदेशी उपक्रमों में सेवा हेतु जाते हैं। यह सचमुच गौरव और किंचित आश्चर्य का विषय है कि भारत के अतिरिक्त विश्व के पौने दो सौ से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी भी अध्ययन का विषय है, जिनमें अमेरिका के पच्चीस विश्वविद्यालय भी सम्मिलित हैं। हिंदी शिक्षण के सौ से अधिक केंद्र अमरीका में है। यही नहीं विद्यालयी स्तर पर विश्व में भारत से दूर एक हज़ार से अधिक स्कूलों में हिंदी विषय है जिसे भारतीय व गैर भारतीय बच्चे पढ़ते हैं।

विदेशी हिंदी विद्वानों और साहित्य सर्जकों की एक परम्परा विगत दो ढाई सौ वर्षों से अबाध रूप से जारी है। इंग्लैंड के जॉन गिलक्राइस्ट, ग्रियर्सन और फ्रांस के गार्सा द तासी से लेकर वेल्जियम के फादर कामिल बुल्के, जापान के प्रोदोई, तोशि तनाका और तोशि मिजोकामी, रूस के वरान्निकोव, डिमिसित्स, चेलिशोव आदि, हंगरी की ईवा और मारिया निगेशी, चेक के प्रो. स्मैकल, पौलेंड के प्रो. वृंस्की, ऑस्ट्रेलिया के प्रो. वाज, इटली की मारियो ला, जर्मनी के लोठार लुत्ज़े और श्लैंडर, फ्रांस की निकोलस बलबीर और बादविल, इंडोनेशिया के बी. राम, बल्गारिया

की योरदाका, अमेरिका के चार्ल्स गोरडन रोडरमल तथा प्रो. गिबरेला, चीन के पाओकाड, कनाडा के जिस्तोफर किंग, रोमानिया के जार्ज आंका इंग्लैंड के ही मैंकग्रेगर और रूपर्ट स्नैल, कोरिया की किम, श्रीलंका की इंदिरा दसनायके, मॉरीशस के रसपुंज, वासुदेव विष्णुदयाल, मधुकर, नागदान, ठाकुरदत्त पाण्डेय, चिंतामणि सोमदत्त बखौरी, अभिमन्यु अनत, रामदेव धुरंधर, नेमा डागंगू फीजी के कमला प्रसाद मिश्र, जोगेन्द्र सिंह कमल और विवेकानंद शर्मा, सूरीनाम के मुंशी रहमान खां, सुरजन परोही और महात्म, त्रिनिडाड के छोटकन लाल, हरिशंकर आदेश और रविन्द्र महाराज, गियाना के पं. रामलाल आदि अनेक प्रख्यात नामों के अतिरिक्त और भी न जाने कितने हिंदी सेवी सेवारत हैं। यह शोध का विषय है। हिंदी साहित्य के अनेक विधाओं के सर्वप्रसिद्ध हिंदी लेखक प्रायः प्रवासी भारतीय हैं जिनमें मॉरीशस के प्रवासी भारतीयों का लेखन विशेष उल्लेखनीय है।

अनिवासी भारतीयों ने इन्हीं प्रवासी भारतीयों की भांति विश्व में हिंदी की ध्वजा का आरोहण किया है। आज अमेरिका में डॉ. भूदेव शर्मा हिंदी की पत्रिका 'विश्व-विवेक' के माध्यम से हिंदी साहित्य और भाषा के प्रति चेतना भर रहे हैं। नार्वे के अमित जोशी की हिंदी पत्रिका 'शांतिदूत' एक अति प्रभावी पत्रिका सिद्ध हो चुकी है, जो हिंदी की एक गहरी छाप छोड़ रही है। इंग्लैंड में 'हिंदोस्थान' 'प्रवासिनी' और 'पूर्वा' पत्रिकाएं हिंदी की आभा बिखेर रही हैं जो अनिवासी नागरिकों के योग से ही प्रकाश में हैं। वि.प्र. 'बटुक', मदनलाल मधु, इंदु प्रकाश पाण्डेय, म.म. गौतम, अचला शर्मा, कु. चंद्रप्रकाश सिंह, उषा प्रियवंदा, दीप्ति नवल, सुषम बेदी, कृष्ण बलदेव, उषा राजे सक्सेना, पदमेश गुप्ता, सुरेश चंद्र शुक्ल, वैद राजेंद्र अरुण, गौतम सचदेव आदि जैसे बहुत अनिवासी भारतीय रचनाकार हैं, जो भारत से दूर अपने-अपने परिवेश में हिंदी के माध्यम से भारत बसाए हुए हैं।

प्रवासी भारतीयों के हिंदी भाषिक प्रयोग और भाषा का महत्व प्रत्येक देश में एक सा नहीं है। भारतवासियों की भांति भाषा के साहित्यिक प्रयोग की दृष्टि से मॉरीशस का स्थान सर्वोपरि है। मॉरीशस में भाषा के साहित्यिक प्रयोग की दृष्टि से मॉरीशस का स्थान सर्वोपरि है। मॉरीशस में भाषा संरचना का आधार भारतवासियों से मिलता-जुलता है। हिंदी भाषा को लोकप्रिय बनाने के लिए मॉरीशस रेडियो और दूरदर्शन निरंतर प्रयासरत है। एम.बी.सी. यानी 'मांरीशन ब्राडकास्टिंग कम्पनी' के तत्वावधान में पूरे दिन हिंदी के कार्यक्रम आते हैं। मॉरीशसवासी दूरदर्शन के माध्यम से भारतीय गीत-संगीत को देखना, सुनना पसंद करते हैं। भारत के लोकप्रिय धारावाहिक वहां भी लोकप्रिय हैं। 'कौन बनेगा करोड़पति' कार्यक्रम ने मॉरीशसवासियों को काफी प्रभावित किया है।

मॉरीशस के महात्मा गांधी संस्थान ने हिंदी की उच्च शिक्षा का समुचित प्रबंध किया है। वर्ष 1988 से हिंदी का डिप्लोमा कोर्स, वर्ष 1990 से बी.ए. ऑनर्स हिंदी और वर्ष 2001 से एम.ए. हिंदी का प्रावधान किया गया है। हिंदी और फ्रेंच का ज्वाइंट ऑनर्स पाठ्यक्रम मॉरीशस विश्वविद्यालय द्वारा चलाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम है, जिसमें विद्यार्थियों की रुचि बढ़ रही है। इन उच्च उपाधियों हेतु स्थापित किए गए इन हिंदी के कोर्सों का वर्चस्व बढ़ रहा है। वहां बी.ए. हिंदी ऑनर्स व एम.ए. हिंदी के विद्यार्थियों के लिए लघु शोध-प्रबंध लिखना भी अनिवार्य है, जो उनकी रचनाशीलता और शोधवृत्ति को बढ़ाता है। हिंदी के इन महती पाठ्यक्रमों के समुचित विकास और दिशा तय करने के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय से एक बाह्य परीक्षक नियुक्त किया जाता है जो 'मॉडरेशन' भी करता है। विद्यालयी स्तर पर भी हिंदी की प्रगति उल्लेखनीय है। सभी विद्यालयों में हिंदी विभाग हैं। हिंदी पत्रकारिता के अन्तर्गत मॉरीशस के बहुत से पत्र-पत्रिकाओं के नाम

है, जिनमें समकालीन परिदृश्य में 'इंद्रधनुष', 'बसंत'... आदि महत्वपूर्ण रहे हैं।... अभिमन्यु अनत आज भी बेहद सक्रिय हैं तथा मॉरीशस के सबसे महत्वपूर्ण रचनाकार के रूप में सम्पूर्ण हिंदी जगत में जाने जाते हैं। उनके साहित्य के कतिपय अनुवाद फ्रेंच में भी आए हैं। फ्रेंच का उत्थान हिंदी की तुलना में इस समय मॉरीशस में बहुत हो रहा है, हिंदी सेवियों को इस तथ्य पर ध्यान देना आवश्यक है।

फीजी में हिंदी की गंगा अविरल बहती रही है परन्तु वहां का हिंदी साहित्य अभी मॉरीशस की तुलना में कुछ पुराने स्वर का है। डॉ. विजयेन्द्र स्नातक का कथन है कि 'यदि कमला प्रसाद मिश्र भारत में रहते, पंत की भांति लोकप्रिय होते, अब पं. विवेकानंद शर्मा का निर्मित होता जा रहा है। 'लहर' पत्रिका के सम्पादन के अतिरिक्त उनके उपन्यास 'जब मानवता कराह उठी' और 'प्रशांत की लहरें' चर्चा का विषय हैं।

साथ ही पेसिफिक विश्वविद्यालय के अधीन फीजी में बी.ए. हिंदी और एम.ए. हिंदी की कक्षाओं का प्रावधान है। हिंदी का एक व्यावसायिक लाभ वहां के उन युवाओं को हो रहा है जो आस्ट्रेलिया जाकर पढ़ना या बसना चाहते हैं। भाषाई परीक्षा के अन्तर्गत वे हिंदी परीक्षा उत्तीर्ण करके भी आस्ट्रेलिया जाने के अधिकारी हो सकते हैं। हिंदी उनके लिए भारत से अमरीका जाने वालों के लिए 'टफल' की भांति है।

'रेडियो फीजी' से हिंदी के कार्यक्रम लगातार प्रसारित होते हैं। कार्यक्रमों का रूप अभी नवीनता की ओर बढ़ना आरम्भ हुआ है अन्यथा भक्ति गीत-संगीत ही प्रचलित हैं। फीजी में अभी राजनैतिक कारणों से हिंदी को प्राथमिकता नहीं दी जा रही है, क्योंकि हिंदी वहां भारतीय प्रवासियों की अस्मिता के साथ जोड़ कर देखी जाती है।

यही अस्मिता सूरीनाम में भी है और त्रिनिडाड में भी। इन देशों में भी भारतीयों को आपस में जोड़ने का मुख्य बिन्दु हिंदी ही है। सूरीनाम राजनैतिक अस्थिरता के कारण अभी बंद द्वार-सा है, जिस कारण वहां की स्थिति ठीक से आंकी नहीं जा सकती। वेस्ट इंडीज़ विश्वविद्यालय' में हिंदी विभाग है, जहां भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् द्वारा भारत से हिंदी प्राध्यापकों को चुनकर भेजा जाता है। त्रिनिडाड में हिंदी भाषा रोमन लिपि में मंदिर संस्कृति के साथ जुड़ी है। अंग्रेजी के वर्चस्व ने हिंदी को भुला दिया था जो अब विगत दस वर्षों से तीव्र गति से उभर रही है। मॉरीशस में रेडियो से प्रसारित होने वाले हिंदी कार्यक्रमों में हिंदी फिल्म 'गीतमाला' सर्वोपरि है। अंग्रेजी में हंस हनुमान सिंह की हिंदी गीतों की व्याख्या के बाद गीत श्रवण करने में जनता की बेहद दिलचस्पी रहती है। जहां तक साहित्य सृजन पक्ष है, त्रिनिडाड में वर्तमान में विशेष उल्लेखनीय साहित्यकार नहीं हैं। हरिशंकर 'आदेश' के बाद रविन्द्र महाराज की हिंदी की सराहना साहित्य जगत में सुनी जाती है या राजनेता वासुदेव पाण्डे की हिंदी वक्तृत्ता बहुत प्रभावी है।

भाषागत अध्ययन की विशेषताओं से युक्त हो व्याकरण या भाषा-वैज्ञानिक आधार पर किसी भाषा को जानने की इच्छा से विश्वविद्यालयों में हिंदी का अध्ययन हो ही रहा है। अपने विपुल साहित्य और उसकी विशिष्टताओं के कारण भी दुनिया में यह भाषा आकर्षित कर रही है। सम्पर्क भाषा के रूप में भी हिंदी भारत के अतिरिक्त कई अन्य देशों में भी सार्वजनिक रूप से प्रयोग की जाती है, जिसका एक खूबसूरत उदाहरण संयुक्त अरब अमीरात और संलग्न ओमान आदि देशों में देखने को मिलता है। इन खाड़ी देशों में अरबी भाषा केंद्र में है तथा उसे पर्याप्त सम्मान भी दिया जाता है। जहां कहीं भी अंग्रेजी भाषा में नामपट्ट आदि हैं वहीं साथ ही अरबी में भी हैं। राजकीय उपक्रमों में वहां अरबी को ही तरजीह दी जाती है। मस्कट में विश्वविद्यालय में अरबी और अंग्रेजी भाषाओं के ही

विभाग हैं, किसी अन्य भाषा के नहीं- तब भी दुकानों व्यवसाय केन्द्रों आदि में जो सम्पर्क की या विनिमय की भाषा है- वह उर्दू शब्द मिश्रित हिंदी है। ओमान में बसे प्रवासी भारतीयों में मलयाली भाषी नागरिकों का बाहुल्य है, तत्पश्चात गुजराती, हिंदी और पंजाबी भाषियों का स्थान है। ओमान के विकास के आधार में भारतीय ही हैं- अत: वहां मलयाली, गुजराती या पंजाबी में भारतीयों का आपसी विनिमय सम्भव नहीं हो पाता, वे हिंदी में बात करते हैं- उधर अरबी भाषी नागरिक इनसे सम्पर्क के लिए फारसी से होते हुए उर्दू और फिर हिंदी पर टिक जाते हैं।

खाड़ी देशों के भारतीयों के लिए अमीरों की कम्पनियों द्वारा 'इंडियन स्कूल' का प्रबंधन होता है, जहां सी.बी.एस.ई. भारत का पाठ्यक्रम व उसी के अधीन परीक्षाएं निर्धारित व संचालित करता है। केवल मस्कट में ही सोलह ऐसे भारतीय स्कूल हैं, जिनमें प्रत्येक स्कूल में कम-से-कम दो हजार विद्यार्थी हैं। इन विद्यार्थियों के लिए आठवीं कक्षा तक हिंदी पढ़ना अनिवार्य है, नवमी कक्षा से हिंदी और फ्रेंच में से एक चुनना होता है।

बहरहाल खाड़ी में लगभग दो सौ इंडियन स्कूल हैं, जहां हिंदी विभाग बड़ा विभाग माना जाता है। हिंदी विपणन के कारण भी वहां बाज़ार की मुख्य भाषा है, जो उसकी शक्ति का परिचायक है।

बाज़ार और मीडिया का प्रभाव आज पूरी दुनिया की सभी मुख्य प्रयोग की जाने वाली भाषाओं के साथ जुड़ा हुआ है। बाज़ार और मीडिया अन्योन्याश्रित हो उठे हैं। हिंदी को इससे अपनी शक्ति जानने का अवसर मिला है। स्विटजरलैंड जैसे शांत सैलानियों के देश में इसी वजह से हिंदी भारी मांग में है। माउंट टिटलस पर्वत के हिम शिखर पर स्थित प्राकृतिक गुफा को देखने भारी संख्या में पर्यटक जाते हैं। पर्वतीय मार्ग पर वहां हिंदी में लिखी तख्तियां जो स्वागतार्थ लिखी हैं, किसी भी भारतीय पर्यटक को भावुक और चकित कर देती हैं। संलग्न लगे बाज़ारों में जाने पर बड़ी-बड़ी दुकानों से सेल्ज़ गर्ल्ज़स हिंदी में पर्यटकों को पुकार कर माल खरीदने की गुहार करती देखी जा सकती हैं। यह हुआ बॉलीवुड की हिंदी फिल्मों की चमक से। मुंबई के निर्माता, निर्देशक फिल्मों की शूटिंग के लिए पूरी यूनिट के साथ स्विट्जरलैंड जाते हैं, जहां उनकी अभ्यर्थना, उपभोक्ता-सामग्री की बिक्री के लिए हिंदी भाषा में की जाती है।

हिंदी सिनेमा की यह भाषाई प्रसारक देन पूर्वी यूरोप के बल्गारिया, ग्रीस आदि देशों में भी बखूबी देखी जा सकती है। हिंदी फिल्मों के कलाकारों के प्रति वहां आकर्षण तथा हिंदी फिल्मी गीतों के प्रति उनका आग्रह चौंकाता है। इंग्लैंड, इटली, बेल्जियम, जर्मनी और फ्रांस तक यह जादू फैला हुआ है। फ्रांस के अधुना नगर पेरिस में इत्र के भव्य स्टोरों में फ्रेंच युवतियां हिंदी में न केवल अभिवादन अपितु समस्त विनिमय कर भारतीय, पाकिस्तानी, श्रीलंकाई, नेपाली, बंग्लादेशी और अफगानी ग्राहकों को आकर्षित भी करती हैं और जेब से अनायास लीरा खींचती हैं।

अफगानिस्तान फिर से उठने की प्रक्रिया में है, वहां आजीविका के साधन सुलभ नहीं रहे हैं। पढ़ने में यह बात संभवत: अचरज की होगी पर सच है। हालैंड का 'मोतीमहल' रेस्तरां हो, पेरिस का 'लालकिला' रेस्तरां या कलोन जर्मनी में स्थित 'विम्पी', सभी जगह यूरोपीय-सी दिखने वाली आकर्षक अफगानी बालाएं यूरोपीय वेशभूषा में हिंदी बोलते हुए भोजन परोसती दिख जाती हैं। हिंदी का ऐसा वर्चस्व इस रूप में भी होता होगा, यह विस्मयकारी ही लगता है।

अब एक नज़र अपने कुछ पड़ोसी देशों पर भी डाल ली जाए। पाकिस्तान में हिंदी शिक्षण की

विश्वविद्यालयी व्यवस्था अच्छे स्तर पर है। लाहौर से कराची तक हिंदी की गूंज है। वहां के हिंदी कथाकारों, समीक्षकों में एक विशेष नाम अहमद हमेश का है, जिन्होंने भारतीय साहित्य की एन्थॉलॉजी उर्दू भाषा में प्रस्तुत कर हिंदी साहित्य के विशिष्ट संदर्भ दिए हैं।

नेपाली साहित्य पर हिंदी साहित्य का पर्याप्त प्रभाव रहा है। हिंदी साहित्य नेपाली साहित्य की तुलना में लगभग एक हज़ार वर्ष अधिक प्राचीन है, जिससे नेपाली साहित्य निरंतर प्रभावित हुआ है। शौरसेनी प्रकृति से निकलने के कारण नेपाली, हिंदी और गुजराती के साथ साम्य रखती है जिस पर देवनागरी लिपि होने से नेपालवासियों के लिए हिंदी सीखना कठिन नहीं होता। प्रतिवर्ष हज़ारों की संख्या में नेपाली छात्र-छात्राएं शिक्षा ग्रहण करने भारत आते हैं और हिंदी सीखते और प्रयोग करते हैं। हिंदी सिनेमा का जादुई प्रभाव भी नेपाल को हिंदी के सामर्थ्य के लिए उत्सुक करता रहता है।

हिंदी का भाषिक व साहित्यिक अध्ययन नेपाल के विश्वविद्यालयों में होता है, विशेषकर त्रिभुवन विश्वविद्यालय में भारतीय हिंदी प्राध्यापक आमंत्रित किए जाते रहे हैं।

म्यांमार यानी बर्मा में हिंदी का अध्ययन विगत चौरासी वर्षों से 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' के माध्यम से होता रहा है। एक समय वहां पांच सौ से अधिक हिंदी पाठशालाएं थीं। वहां की आर्य समाज संस्थाएं भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में तत्पर रही हैं। हिंदी के अन्यतम प्रसारक, प्रचारक और शब्द-शिल्पी 'मौतिरि' (चंद्रप्रकाश प्रभाकर) जिन्हें 'गोदान' का बर्मी भाषा के अनुवाद करने पर तत्कालीन बर्मी सरकार द्वारा पुरस्कृत किया गया, ने अनेक हिंदी कृतियों का बर्मी में तथा बर्मी साहित्यिक कृतियों का हिंदी में अनुवाद किया है, जिनमें टैक्तो फो नांई मौताया और चीओं जैसे समर्थ वर्गी रचनाकार हैं। मौतिरि 69 वर्ष की आयु में अभी भी हिंदी-बर्मी अनुवाद करते हैं, वे म्यांमार से विस्थापित होकर दिल्ली में रहते हैं।

जापान के डेढ दर्जन विश्वविद्यालयों में हिंदी सिखाई जाती है। वहां की हिंदी पत्रिका 'ज्वालामुखी' का साहित्यिक स्तर बहुत ऊंचा माना जाता है। हिंदी के माध्यम से भारत को जानने की लालसा से जापानी हिंदी सीखते हैं। प्रो. दोई, तोश तनाका, कोगा आदि सम्मानजनक नामों के बाद इस समय जापान में हिंदी के प्रोफेसर तोमिओ मिजोकामि विश्व स्तर पर हिंदी प्रसारक के रूप में यशस्वी हो रहे हैं। वे हिंदी के अतिरिक्त बांग्ला और पंजाबी भाषाओं के भी अच्छे जानकार हैं। उनका कार्य क्षेत्र विस्तृत एवं बहुमुखी है, उन्होंने हिंदी धारावाहिक 'रामायण' का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन एवं रूपांतर तैयार करने के अतिरिक्त "काया-कल्प" नाटक की जापानी छात्रों की रंग मंडली लेकर देश-विदेश में उसका प्रस्तुतीकरण का बीड़ा उठाया है। हिंदी में इस जापानी प्रस्तुति का मंचन देख 1999 में लंदन में आयोजित हुए विश्व हिंदी सम्मेलन के अवसर पर आए प्रतिनिधियों ने न केवल भरसक सराहना की अपितु अपने देशों में निमंत्रित भी किया।

ओसाका विश्वविद्यालय और तोक्यो विश्वविद्यालय के अतिरिक्त ताइको विश्वविद्यालय, ओतानि विश्वविद्यालय, ओचेमन माकुइन विश्वविद्यालय और कानन विदेशी भाषा विश्वविद्यालय में भी हिंदी का यथोचित शिक्षण होता है। जापान में हिंदी भाषा का शिक्षण कराने में कई भारतीय विद्वानों की महत्वपूर्ण भूमिका है। चीन में भी हिंदी-चीनी शब्दकोश बहुत प्रसिद्ध है तथा पूर्वी भाषा विभाग, पेइचिंग विश्वविद्यालय हिंदी अध्ययन का एक बड़ा केंद्र है, जहां ल्यू को नान जैसे समर्थ हिंदी भाषाविद् पढ़ाते रहे हैं, उन्होंने चीनी भाषा में हिंदी पाठय-पुस्तक भी प्रकाशित की, जिससे वहां के वासी सुगमता से हिंदी सीख पाते हैं। वर्ष 1949 में चीन में सांस्कृतिक आंदोलन

के बाद से हिंदी अध्ययन की सुविधाएं विकसित होती रही हैं। सम्प्रति भक्ति काल से आधुनिक काल तक की अनेक प्रमुख हिंदी कृतियों के अनुवाद चीनी भाषा में हो चुके हैं।

रूस में विगत पचास वर्ष से हिंदी का अध्यापन निर्बाध हो रहा है। यूं 1930 में स्थापित प्राच्य अध्ययन संस्थान, लेनिनग्राद से हिंदी साहित्य का परिचय रूसवासियों को मिलता रहा है। रूस के विदेश मंत्रालय द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय संबंध संस्थान' मास्को से पांच साल का पाठ्यक्रम निर्धारित है, जो रूसी राजनयिकों के प्रशिक्षण के लिए होता है जो भारत आते हैं।

शोध कार्य और अनुवाद कार्य, दोनों ही किसी भी भाषा को विकसित करने में सहायक होते हैं। डॉ ब्लादीमीर चेंरीनस्कोव अनुवाद में अग्रणी हिंदी भाषाविद् है। गौरतलब है कि ऐसी अनूदित पुस्तकों के संस्करण वहां तीस चालीस हजार प्रतियों के होते हैं। हिंदी विद्वानों में वरान्निकोव, चेलिशोव, येर्निशोव, ल्यूदमिला आदि नामों से हिंदी प्रेमी परिचित हैं।

वर्ष 1994 से 'वॉयस ऑफ रशिया' रेडियो से प्रतिदिन दो घंटे के हिंदी कार्यक्रम प्रसारित होते रहे हैं। भारत-रूसी मैत्री क्लबों द्वारा हिंदी सिनेमा तथा उनके संगीत से रूसियों को परिचित करवाया जाता है। 'भारतभूमि' और 'भारत दर्पण' हिंदी पत्र भी रूस से प्रकाशित हुए हैं।

श्रीलंका की हिंदी सेवी इंदिरा दसनायके अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी जगत की एक विभूति हैं। सिंहली भाषाविद इंदिरा, हिंदी की एक श्रेष्ठ अध्यापिका और लेखिका हैं। सिंहली भाषा में संस्कृत के अतिरिक्त हिंदी के भी बहुत से शब्द है, जो सिंहलियों को हिंदी सीखने की ओर प्रेरित करते हैं।

श्रीलंका में स्कूल और कॉलेज स्तरों पर हिंदी सीखने की सुविधा है। विद्योदय विश्वविद्यालय, बैलणी विश्वविद्यालय और पेरादेणी विश्वविद्यालय में हिंदी अध्ययन का प्रावधान है।

शास्त्रीय संगीत और हिंदी फिल्मों ने श्रीलंका में हिंदी को बचाकर रखा है। यदि हिंदी-सिंहली शब्दकोश तैयार नहीं होते, हिंदी पढ़ना और अधिक असुविधाजनक हो जाएगा।

हिंदी मां की देशी और विदेशी संताने हिंदी का गौरव और मान बढ़ाने को कृतसंकल्प रही हैं। थाईलैंड के करुणा कुशलासय, कोरिया के ली जंग हो, नेपाल के सूर्यनाम गोप, म्यांमर के हरिवदन शर्मा आदि भारत के निकटस्थ देशों में हिंदी की दुंदुभि बजाते रहे हैं। इससे पता चलता है कि हिंदी का आकाश अत्यंत समृद्ध है।

"अगर हिन्दुस्तान को सचमुच आगे बढ़ना है, तो चाहे कोई माने या न माने, राष्ट्रभाषा तो हिंदी ही बन सकती है, क्योंकि जो स्थान हिन्दी को प्राप्त है, वह किसी और भाषा को नहीं मिल सकता।"

माननीय जल शक्ति मंत्री, भारत सरकार द्वारा जोधपुर जिले में बस्तवा माताजी बांध का शिलान्यास

वाप्कोस राजस्थान के जोधपुर, जैसलमेर व सीकर जिलों में कृत्रिम पुनर्भरण संरचनाओं के निर्माण हेतु परियोजना प्रबंधन परामर्शदाता है। परियोजना में इन्द्रोका और बस्तावा माता जी गांवों में (जिला जोधपुर) दो अर्थन बांधों सहित 101 एनीटकों व चक बांधों की योजना, डिजाइन व निर्माण शामिल है। कुछ एनीकटों का कार्य पूरा कर लिया गया था, जिनका उद्घाटन दिनांक 12.03.2022 को श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, माननीय जल शक्ति मंत्री, भारत सरकार श्री कैलाश चौधरी, माननीय कृषि व किसान कल्याण राज्य मंत्री, भारत सरकार द्वारा जोधपुर के महाराजा महामहिम महाराजा गजसिंह साहब की सादर उपस्थिति में बस्तवा माताजी बांध के शिलान्यास के साथ किया गया।

वाप्कोस ने इस अवसर पर सक्रिय रूप से भाग लिया और श्री आर.के. अग्रवाल, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस और एनपीसीसी ने गणमान्य व्यक्तियों को परियोजना की स्थिति और इसके लाभों से अवगत कराया और धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। एक बार पूरी हो जाने पर ये परियोजनाएं राजस्थान के विभिन्न भागों में जल की कमी की चिंता को कम कर देंगी। स्थानीय लोगों ने इस आयोजन में सक्रिय सहभागिता से भाग लिया, जिसे प्रेस मीडिया द्वारा व्यापक रूप से कवर किया गया था।

नारी की पहचान

मैं तो चिड़िया थी तेरे आंगन की बाबा,
इतनी जल्दी मेरा घर आंगन क्यों छुड़ा दिया,
देख के उसकी शानो-शौकत...
तुमने मुझे उसका बना दिया...
मुड़-मुड़कर आंखों में आंसू भरे
देखती रही तुझे बाबा...
पर तुमने तो बड़े प्यार से मुझे
विदा कर उसके आंगन पहुंचा दिया...

इस आंगन का तो ये नजारा है...
माँ को अपना गुड्डु ही प्यारा है...
पिता को अपनी बिटिया प्यारी है,
तब मैंने जाना.....
इस घर में मेरी पहचान एक नारी है।

अनायास मुझे लगा मैं बहुत बड़ी हो गई
प्रेम, समर्पण, त्याग और ममता की मूरत हो गई
कब अपनी ख्वाहिशों को मारकर.....
दूसरों की इच्छा पर जीने लग गई.....
कभी प्रेम, कभी नफरत, कभी उल्हानों का सिलसिला
पर वो पल भी मैंने हंसकर भुला दिया.....

आज का ये दिन कल से प्यारा है.....
माँ-पिताजी को गुड्डु-गुड़िया के साथ प्यारा है,
हम सफर चले जब साथ जीना आसान हो गया
मेरी छुपी प्रतिभाओं को नया आयाम मिला.....
अब मैं एक समर्थ नारी हूँ.....
सारी मुश्किलों पर अकेली भारी हूँ.....
सम्मान देना, प्यार देना निर्बल न समझना नारी को
नारी दो दहलीज की शान है
यही आपके और आपके बच्चों की जान है.....

-अक्षय भारद्वाज
स. प्र. (प्रशा.)

स्वर्णकुमारी देवी

– प्रथम उपन्यासकार

तेरह वर्ष की उम्र में गीतों और कहानियों का लेखन तथा इक्कीस वर्ष की उम्र तक ख्याति-प्राप्त लेखिका-वह भी उस युग में, जबकि महिलाओं के लिए शिक्षा ही एक अजूबा समझी जाती थी। श्री रवींद्रनाथ टैगोर की बड़ी बहन स्वर्णकुमारी देवीह बांग्ला की प्रथम प्रसिद्ध लेखिका ही नहीं, भारत की पहली महिला उपन्यासकार भी हैं।

स्वर्णकुमारी देवी ने बारह-तेरह वर्ष की आयु में लिखना शुरू किया और सतहत्तर वर्ष की आयु में अपनी अंतिम सांसों तक लिखती रहीं। उन्होंने छोटी-बड़ी कहानियाँ, ऐतिहासिक-सामाजिक उपन्यास, नाटक, गीत, कविताएँ, मुहावरे आदि सभी कुछ लिखे। पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त सत्ताईस ग्रंथों की रचना की, पुस्तक समीक्षाएँ लिखीं। 'भारती' पत्रिका का सात वर्षों तक संपादन किया। बांग्ला के अतिरिक्त संस्कृत व अंग्रेजी में भी लिखा। समाज-सेवा के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किया, पर विशेष ख्याति उन्हें कथाकार के रूप में मिली। उन्हें बांग्ला साहित्य की पहली अच्छी लेखका के रूप में याद किया जाता है। पर उनकी यह ख्याति बंगाल तक ही प्राय: क्यों सीमित रही, इसका कारण संभवत: यह रहा कि टैगोर ने अपनी जीवनी तथा अन्य रचनाओं में अपनी इस लेखिका बहन का उल्लेख न के बराबर किया है। 'भारत की प्रथम महिला उपन्यासकार' के रूप में तो शायद बंगाल में भी उन्हें कम जाना जाता है।

सन् 1876 में प्रकाशित 'दीप-निर्वाण' उनका प्रथम उपन्यास है, जो उनकी इक्कीस वर्ष की आयु में प्रकाशित हुआ। इसमें पृथ्वीराज व संयोगिता की कहानी है। पहला उपन्यास होने पर भी भावनाओं की अभिव्यक्ति व शैली में यह साधारण नहीं था, इसलिए इसके प्रकाशित होते ही उनकी ख्याति चारों ओर फैल गई थी। इस प्रोत्साहन के प्रभाव से अगले वर्ष सन् 1877 में ही 'मिबारराज' नामक उनका दूसरा ऐतिहासिक उपन्यास प्रकाश में आ गया। फिर सन् 1879 तक 'मालती' और 'छिन्नमुकुल' सामने आए। 'छिन्नमुकुल' में भाई-बहन के प्रेम के रूप में बांग्ला रोमांस को एक नया रूप दिया गया था। 'हुगलीर इमामबाड़ी' सन् 1887 में प्रकाशित हुआ, जिसमें मोहम्मद मोहसिन की जीवनी को उपन्यास का विषय बनाया गया है। सन् 1890 में 'विद्रोह' तक 1894 में 'फूलेरमाला' नामक दो अन्य ऐतिहासिक उपन्यास प्रकाशित हुए। इसी बीच सन् 1893 में उनका एक सामाजिक उपन्यास 'स्नेहलता' आधुनिक समाज (तत्कालीन बांग्ला समाज) की समस्याओं पर आधारित उनका पहला उपन्यास था। इस उपन्यास की खूब चर्चा विषय-वस्तु व चरित्र-चित्रण को लेकर रही। आज भी यह उनका सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना जाता है।

इसके बाद सन् 1898 में रोमांटिक प्रेम कहानीवाला एक उपन्यास 'कहा के' (किसको) प्रकाशित हुआ और बीच में एक अंतराल के बाद 1920 से 1925 तक फिर उनके तीन अन्य उपन्यास प्रकाश में आए। इनमें से

'विचित्रता' के 1920 में, 'स्वप्नवाणी' के 1921 में तथा 'मिलन रात्रि' के 1925 में प्रकाशित होने का उल्लेख मिलता है। इतने सारे उपन्यास! और उपन्यास के क्षेत्र में किसी महिला द्वारा नए प्रयोग में!

इस आश्चर्य का उत्तर देता है उनका परिवेश। स्वर्णकुमारी देवी महर्षि देवेंद्रनाथ टैगोर की पुत्री थीं और कवींद्र रवींद्रनाथ टैगोर की बड़ी बहन। उनका स्थान श्री देवेंद्रनाथ की चौदह संतानों में दसवाँ था। बचपन से ही वह ऐसे संबंधियों से घिरी थीं, जिनके घराने की विद्वता से सभी परिचित हैं। शान-शौकत, शिष्टाचार, देशी-विदेशी भाषाओं व साहित्य का अध्ययन, अध्यात्म, संगीत, चित्रकला व अन्य ललित कलाएँ–सभी कुछ उन्हें सांस्कृतिक विरासत के रूप में मिला था। उनका परिवार पूर्व व पश्चिम की संस्कृतियों का संगम-स्थल ही नहीं, दोनों के 'सर्वोत्तम' से विभूषित था। इतिहास, भूगोल, प्राकृतिक विज्ञान, साहित्य-सभी क्षेत्रों में अधिकतम ज्ञान-प्राप्ति की प्रतियोगिता ही वहां नहीं चलती थी, विचारों व भावनाओं की अभिव्यक्ति की भी समुचित शिक्षा और प्रेरणा उपलब्ध थी। ऐसे वातावरण में कोई प्रतिभा प्रस्फुटित हुए बिना कैसे रह सकती थी? उनकी जन्मजात प्रतिभा का प्रमाण इससे मिलता है कि बहुत छोटी उम्र में ही इस बालिका को माइकेल मधुसूदन तथा ईश्वर गुप्त की बहुत सी कविताएं पूरी तरह याद थीं और वह उन्हें सुनाती ही चली जाती थीं।

स्वर्णकुमारी देवी की शिक्षा घर में शुरू होकर घर पर ही समाप्त हुई। उनके परिवार में परदा था। प्रतिष्ठित घरानों की लड़कियां तब घरों से बाहर नहीं जाती थीं। विद्वान् पिता की देखरेख में प्रसिद्ध विद्वानों और अपने बड़े भाई द्वारा ही उन्होंने शिक्षा ग्रहण की। उनका विवाह भी तेरह वर्ष की आयु में हो गया। इस प्रकार यद्यपि वे ऐसी सामाजिक परिस्थितियों में पली थीं, जो स्त्रियों को उच्च व स्वतंत्र शिक्षा प्राप्त करने में बाधक थीं, फिर भी उन्हें समय के अनुसार सर्वोत्तम शिक्षा मिली। बचपन में उन्होंने बंगला व संस्कृत पढ़ी। विवाह के कुछ समय बाद जब वह अपने भाई के पास बंबई में थीं, उन्होंने अंग्रेजी साहित्य का भी अध्ययन किया। पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव उन पर अंग्रेजी साहित्य के अध्ययन से पूर्व भी पड़ चुका था, क्योंकि उनके परिवार के बौद्धिक व्यक्ति पश्चिम की किसी अच्छी चीज का केवल अभारतीय होने से बहिष्कार नहीं करते थे। इस अध्ययन और परिवेश ने मिलकर उन्हें भारतीय नारी के सामाजिक स्तर को ऊंचा उठाने की प्रेरणा दी। हिंदू स्त्रियों की सामाजिक अयोग्यताओं का उन्होंने अपनी लेखनी द्वारा तथा क्रियात्मक रूप में भी विरोध किया। वह देखती थीं कि उनके पिता का घर कलाओं का मंदिर ही नहीं, अध्यात्म का ऐसा मंदिर भी था, जहां मानव-मानव में कोई भेद नहीं समझा जाता था। मानवता की सेवा को अपना मुख्य धर्म समझा जाता था। पिता द्वारा रूढ़ियों के निवारण और सामाजिक-धार्मिक सुधार को उन्होंने ध्यान से देखा था। इस सबसे प्रभावित होकर उन्होंने स्वयं भी 'सखी-समिति' नामक एक महिला संगठन बनाया, जो विधवाओं और गरीब लड़कियों की शिक्षा, आर्थिक सहायता, रूढ़ियों के खिलाफ संघर्ष आदि कार्यक्रम चलाता था। इससे उनके यश व प्रतिष्ठा में और वृद्धि हुई।

'भारती' पत्रिका का बांग्ला साहित्य और साहित्यकारों के विकास में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। शरतचंद्र की पहली कहानी 'भारती' में छपी थी। 'भारती' का प्रकाशन प्रारंभ होने तक स्वर्णकुमारी लेखिका के रूप में प्रसिद्ध हो चुकी थीं। उन्होंने न केवल 'भारती' में निरंतर लिखा, बल्कि आगे चलकर सन् 1908 से 1914 तक उसका संपादन भी किया। इसके बाद तो उनकी ख्याति इतनी फैल चुकी थी कि सन् 1921 में 'बंग साहित्य सम्मेलन' के उन्नीसवें अधिवेशन में उस सम्मेलन के अध्यक्ष श्री रवींद्रनाथ टैगोर की अनुपस्थिति में सर्वसम्मति से उन्हें ही अध्यक्ष बनाया गया। एक

महिला साहित्यकार के रूप में उन दिनों उनकी यह सफलता निश्चय ही स्पर्धा का विषय थी।

स्वर्णकुमारी देवी के नाटक व गीत इतने प्रभावशाली नहीं बन पड़े जितने कथा-साहित्य। कहानी, उपन्यास और वर्णनात्मक निबंधों में उनकी शैली सरल व प्रभावपूर्ण थी। उन्होंने कुछ शब्दों व मुहावरों का रवींद्रनाथ से पहले प्रयोग किया, इस दृष्टि से कुछ लोग रवींद्र साहित्य पर उनका भी कुछ प्रभाव मानते हैं; यद्यपि रवींद्रनाथ ने इसे कहीं स्वीकार नहीं किया है। एक सुधारक दृष्टिकोण की लेखिका होने से उनकी शैली हास्य-व्यंग्य प्रधान है। उसमें घरेलू बोलचाल के शब्दों व शुद्ध संस्कृत के शब्दों का अद्‌भुत मिश्रण है। अपनी सरल, मनोरंजक व व्यंग्यात्मक शैली से वह लोगों को घायल किए बिना आनंदित करती थीं। उनकी सफलता और लोकप्रियता का रहस्य भी शायद यही था। किन्तु उनकी यह शैली मौलिक और जनप्रिय होकर भी साहित्यिक क्षेत्र में विशेष प्रशंसित नहीं हुई। इसका कारण है उस समय बंगाल में चमत्कारपूर्ण आलंकारिक शैली का प्रयोग और प्रभाव। अब जबकि यह प्रभाव नहीं रहा, इस प्रथम महिला उपन्यासकार की कृतियों का उस विशेष परिवेश के संदर्भ में अध्ययन व मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

हिंदी भाषा

सेतु संगम हिंदी भाषा
हिंदी हमारी आन है हिंदी हमारी शान है, हिंदी हमारी चेतना वाणी का शुभ वरदान है।
एक डोर में सबको जो है बांधती वह हिंदी है, कश्मीर से कन्याकुमारी।
साहित्य की फुलवारी, सरल-सुबोध पर है भारी
हिंदी हमारी अस्मिता, हिंदी हमारा मान है, जब तक गगन में चांद।
सूरज की लगी बिंदी रहे, सुंदर है, मनोरम है, मीठी है सरल है।
ओजस्विनी है और अनूठी है ये हिंदी, यूं तो देश में कई भाषाएं और हैं,
पर राष्ट्र के माथे की बिंदी है ये हिंदी।
हिंदी हर दिल की धड़कन है हिंदी जनता की भाषा है,
हम देशभक्त कहलाएंगे, जब हिंदी में सब काम करें
हिंदी हम सबका स्वाभिमान, यह जनता की अभिलाषा है।
हिंदी से पहचान हमारी, बढ़ती इससे शान हमारी, माँ की कोख से जाना जिसको,
मैं सब की जानी पहचानी भारत की भाषा हिंदी हूँ।
भारत के जनमानस से मेरा सदियों पुराना नाता है
मैं भारत माँ के मस्तक पर सबसे चमकीली बिंदी हूँ।

(भारत माता की जय)

-राघवेन्द्र तिवारी
डी.ई.ओ.
वाप्कोस, भोपाल

कोर्नेलिया सोराबजी

– प्रथम अधिवक्ता, समाज-सुधारक व लेखिका

देश में जिन दिनों स्वतंत्रता संग्राम जोर पकड़ रहा था, उन्हीं दिनों कोर्नेलिया सोराबजी एक विख्यात विधिवेत्ता और अधिवक्ता के रूप में उभरीं। उन्हें भारत की पहली महिला अधिवक्ता होने का गौरव प्राप्त है। वह महिलाओं की शिक्षा की प्रबल पक्षधर थीं। उनका मानना था कि अगर वास्तव में समाज को सुधारना है तो उसके लिए सबसे पहले नारियों को शिक्षित करना होगा। साथ ही वह पारंपरिक भारतीय जीवन-शैली और संस्कृति को भी पसंद करती थीं। आधुनिक शिक्षा और परंपरा का ऐसा अद्भुत संगम विरले ही देखने को मिलता है।

कोर्नेलिया का जन्म 15 नवम्बर, 1866 को नासिक शहर में हुआ था। उन दिनों महाराष्ट्र राज्य बॉम्बे प्रेजिडेंसी के नाम से जाना जाता था। कोर्नेलिया कुल नौ भाई-बहन थे। पिता सोराबजी करसेदजी एक सम्मानित पारसी ईसाई थे तथा माता फ्रांसिना फोर्ड एक भारतीय महिला थीं, जिनका पालन-पोषण एक ब्रिटिश दंपती ने किया था।

कोर्नेलिया की माता का मानना था कि शिक्षा घर से ही प्रारंभ हो जानी चाहिए और महिला को इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। अपनी इसी विचारधारा के चलते उन्होंने पूना (वर्तमान पुणे) में लड़कियों के लिए अनेक विद्यालयों-पाठशालाओं की स्थापना की। उनकी ख्याति इस प्रकार की थी कि आस-पड़ोस की स्थानीय महिलाएं उनके पास विरासत व संपत्ति के अधिकारों से जुड़े मामलों पर चर्चा करने आतीं। नन्हीं कोर्नेलिया को ये सब चर्चाएं सुनना अच्छा लगता था। इन कानूनी चर्चाओं ने उनके बाल मन पर ऐसा गहरा प्रभाव डाला कि उन्होंने स्वयं भी वकील बनने की ठान ली।

कोर्नेलिया की आरंभिक शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई। उनके पिता मिशनरी पाठशाला चलाते थे। कुछ बड़ी होने पर कोर्नेलिया भी इसी विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने लगीं। वह बचपन से ही पढ़ाई-लिखाई में मेधावी थीं। 1892 में उन्हें 'बैचलर ऑफ सिविल लॉ' की परीक्षा में बैठने की विशेष अनुमति मिल गई। यह परीक्षा इंग्लैंड में आयोजित की जाती थी। कोर्नेलिया इस परीक्षा में बैठने और इसे उत्तीर्ण करने वाली पहली भारतीय महिला थीं।

सन् 1894 में कोर्नेलिया भारत लौट आईं। अब वह बाकायदा प्रशिक्षित अधिवक्ता थीं। उन दिनों घर की महिलाओं को पराए पुरुष के साथ बातें नहीं करने दी जाती थीं। यह प्रथा हिंदू व मुसलमान दोनों धर्मों में समान रूप से लागू थी। कोर्नेलिया ने ऐसी ही महिलाओं की आवाज बनने का निश्चय किया। अकसर इन नारियों के पास अकूत धन-संपत्ति होती थी। लेकिन अशिक्षित होने के कारण और कुछ धार्मिक पाबंदियों के चलते

कुटिल रिश्तेदार उनकी संपत्ति हड़प लेते थे। कोर्नेलिया ने उन्हीं नारियों की आवाज को न्यायालय तक पहुंचाने का बीड़ा उठाया।

उन्होंने काठियावाड़ और इंदौर रजवाड़ों में नियुक्त ब्रिटिश एजेंटो के सम्मुख पर्दानशीन नारियों की फरियाद पहुंचाने हेतु विशेष अनुमति प्राप्त की। लेकिन तब भी एक कठिनाई थी। वह इन नारियों को न्यायालय में न्याय नहीं दिला सकती थीं। इसका कारण था कि उन दिनों भारतीय न्याय व्यवस्था में महिला अधिवक्तओं को कोई स्थान नहीं था। अत: कानूनी मान्यता प्राप्त करने के लिए कोर्नेलिया ने 1897 में बंबई विश्वविद्यालय में एल-एल.बी. की परीक्षा और 1899 में इलाहाबाद उच्च न्यायालय की प्लीडर्स (याचिकाकर्ता) परीक्षा में बैठने का निश्चय किया। इन दोनों ही परीक्षाओं में उन्होंने अच्छी सफलता प्राप्त की। किंतु फिर भी उन्हें अधिवक्ता के रूप में मान्यता प्राप्त करने के लिए लंबी प्रतीक्षा करनी पड़ी। महिलाओं द्वारा न्यायालय में वकालत करने पर कानूनी रोक थी। इस कानून को सन् 1924 में परिवर्तित किया गया। इस कानून को बदलवाने में भी कोर्नेलिया ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सन् 1902 से ही उन्होंने लंदन स्थित इंडिया ऑफिस में याचिका भेजनी शुरू कर दी थी कि प्रांतीय अदालतों में महिलाओं व अवयस्कों के प्रतिनिधित्व का प्रावधान किया जाए। सन् 1907 में उन्हें बंगाल की बाल अदालत में लेडी असिस्टेंट (महिला सहायक) नियुक्त किया गया। सन् 1907 तक कोर्नेलिया बंगाल, बिहार, उड़ीसा और असम राज्यों में वकालत का कार्य कर रही थीं। उन्होंने लगभग 20 वर्षों तक इन राज्यों में कानूनी सेवाएं दीं। इस दौरान उन्होंने 600 से अधिक महिलाओं व अनाथ बच्चों को अदालतों से न्याय दिलाया और बदले में कोई शुल्क भी नहीं लिया।

आगे चलकर उन्होंने अपनी पुस्तक 'बिटवीन द ट्विलाइट्स' और अपनी दो आत्मकथाओं 'इंडिया कॉलिंग' (1936) व 'इंडिया रीकॉल्ड' (1936) में ऐसे अनेक मामलों का वर्णन किया है। सन् 1924 में महिलाओं को अदालतों में वकालत करने की अनुमति मिल गई। कोर्नेलिया ने कलकत्ता में वकालत आरंभ कर दी। लेकिन पुरुषों के पूर्वग्रहों व भेदभाव के चलते उनका कार्य अत्यंत सीमित रहा। वह अदालत में चल रहे मामलों पर केवल राय तैयार करतीं। अदालत में सीधे जिरह करने का उन्हें अधिकार नहीं था। इन सबके चलते उन्होंने पांच साल बाद ही 1929 में उच्च न्यायालय से अवकाश ग्रहण कर लिया। सेवानिवृत्ति के पश्चात् वह लंदन में बस गईं। वहीं 6 जुलाई, 1954 को उनके घर नॉर्थबरलैंड हाउस में 88 वर्ष की अवस्था में उनका देहांत हो गया।

कोर्नेलिया सोराबजी को आज एक समाज-सुधारक के रूप में जाना जाता है। उन्होंने महिलाओं व बच्चों की भलाई के लिए आजीवन संघर्ष किया। बाल विवाह रोकने तथा विधवाओं की दशा सुधारने में अपना योगदान दिया। वह राष्ट्रीय महिला परिषद् की बंगाल शाखा से जुड़ी रहीं। विश्वविद्यालय महिला संघ और महिलाओं के लिए समाज सेवा की बंगाल लीग की सदस्य भी रहीं। भारतीय नारियों के उत्थान व उनकी सेवाओं के लिए उन्हें 1909 में 'केसर-ए-हिंद' स्वर्ण पदक से सम्मानित भी किया गया।

अपने पूरे जीवन में उन्होंने भारतीय नारियों के स्वशासन का प्रबल समर्थन किया। नारियों के उत्थान के लिए उन्होंने अकसर अपनी सखी और समाज-सुधारक पंडिता रमाबाई के साथ मिलकर कार्य किया। वह मानती थीं कि शिक्षा महिला की दशा सुधारने का पहला सोपान है। उन्होंने भारत व अमेरिका की अनेक यात्राएं भी कीं। वह भारत में महिलओं व छोटे बच्चों की भलाई के लिए लीग फॉर इन्फैंट वेलफेयर, मैटरनिटी ऐंड डिस्ट्रिक्ट नर्सिंग नामक संस्था बनाना चाहती थीं, पर उनका यह स्वप्न अधूरा ही रह गया।

एक चोर की मौत

गांव में आये दिन चोरी हो रही थी। अब तक रात के समय गांव से दस भैंस, चार ऊंट और पांच जोड़ी बैल चोरी हो चुके थे। चोर का कोई सुराग नहीं लग रहा था। लोग आये दिन की इन चोरियों से इतने परेशान हो चुके थे कि रात को उन्होंने झुंड़ बनाकर पहरा देना शुरू कर दिया था। चोर इतने शातिर थे कि वे पहरा देने वाली टोली से विपरीत मोहल्ले में चोरी कर जाते थे। काफी छान-बीन के बाद पता चला कि दो नामी चोर काडू और जैलाल ही इन चोरियों को अंजाम दे रहे हैं। इनके बारे में कहा जाता था कि इनकी चोरी आज तक बरामद नहीं हुई। न ही यह कभी पुलिस के हाथ आये। दोनों रिश्ते में चाचा भतीजे थे। इनका आतंक आस पास बीस पच्चीस गांवों में था।

आये दिन होने वाली इन चोरियों से लोग तिलमिला गये थे। उनका गुस्सा बेकाबू हो रहा था मगर उतारें तो उतारें किस पर। चोर हाथ नहीं आ रहे थे। घटनाओं का तारतम्य भी कुछ ऐसा बैठ रहा था कि दो चार दिन लोग रात को पहरा देते और फिर चुपचाप बैठ जाते। उन्हीं दिनों चोरी हो जाती। जिस दिन पहरा हठा कि चोरी हुई। समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें? दिन भर लोग खेतों में जी तोड़ मेहनत करते और रात को सोना भी नसीब न होता। करीब महीने भर तक चोरों और गांव वालों के बीच लुकाछिपी होती रही। मगर नतीजा वही ढाक के तीन पात।

चोरों का भी अपना पूरा समाज होता है। इनके भी कुछ नियम कायदे होते हैं जिन पर यह लोग अडिग रहते हैं। जब भी यह चोरी करने निकलते है कुछ शकुन देखकर ही निकलते हैं। इनका मानना है कि यदि शकुन सही हो गया तो वे निश्चित रुप से चोरी करने में सफल रहेंगे। यह लोग चोरी के सामान को अपने घर नहीं रखते। उनके सम्पर्क में कुछ ठिकाने रहते है जहां वो चोरी के पशुओं को छिपा देते हैं। अन्य ठिकाने वाले भी ऐसा ही करते हैं। यह लोग चोरी के पशुओं की वापसी कुछ रकम (फिराई) लेकर ही करते हैं।

उन दिनों गेहूं की फसल की सिंचाई का समय चल रहा था। गांव में कुछ गिने चुने कुओं पर ही डीजल इंजन थे। बारी-बारी से लोग उनसे सिंचाई करते थे सो रात को भी लोगों को खेतों में सिंचाई के लिये जाना पड़ता था। ऊपर से उन दिनों डीजल की बड़ी किल्लत थी। पास के कस्बे मंडावर में दो दिन तक लाईन में लगने के बाद बड़ी मुश्किल से डीजल मिल पाता था। ऐसे समय में पीछे से चोरी हो जाना कोढ़ में खाज का काम कर रहा था।

एक रात गांव के हरदयाल मास्टर की अगुवाई में गांव वाले चोरी की समस्या पर गहन विचार करने के लिये इकट्ठा हुए। गांव में यह मास्टरजी ही पढ़े लिखे और नौकरी पेशा व्यक्ति थे। लोग इनकी बहुत इज्जत करते थे। गांव के ही एक प्राईमरी स्कूल में ये मास्टर थे। जाति के ब्राह्मण थे। यह ताकतवर शरीर के धनी थे। कहते है इन्होंने एक बार मानसी गंगा तैरकर पार की थी। पढ़े लिखे होने के कारण गांव के सामूहिक काम में यह अगुवा रहते थे। यदि किसी के साथ कोई राज तेज का मुकदमा हो या कोर्ट कचहरी का काम हो सब लोग मास्टरजी को ही याद करते थे। करे भी क्यों

नहीं? उनकी थाना और कचहरी में जानकारी भी अच्छी थी।

सारे गांव के लोग किशोरी की तिबारी पर इकट्ठा होकर इस समस्या पर अपनी अपनी राय देने लगे। मास्टर ने राय दी की गांव को पांच हिस्सों में बांटकर पांच टोलियां बनाई जायें और पहरा दें ताकि सारे गांव की निगरानी ठीक से हो सके। एक टोली का मुखिया खुद मास्टर था। दूसरी टोली का मुखिया घम्मा को बनाया गया। तीसरी का जैला मुखिया था और बाकी के कन्हैया और बाबू बामन को बनाया गया। सभी को जरूरी बातें बता दी गई। किसी भी हालत में कोई सोयगा नहीं। थोड़ी सी भी गड़बड़ी का आभास होने पर तुरंत आवाज लगाकर बाकी टोलियों को संदेश देगा। यह सारी कर्यवाही अभी चल ही रही थी कि गांव के हरफूल ने आकर बताया कि चोर अभी-अभी उसका ऊंट खोलकर ले गये। सभी लोग हरफूल के घर की तरफ हो लिये।

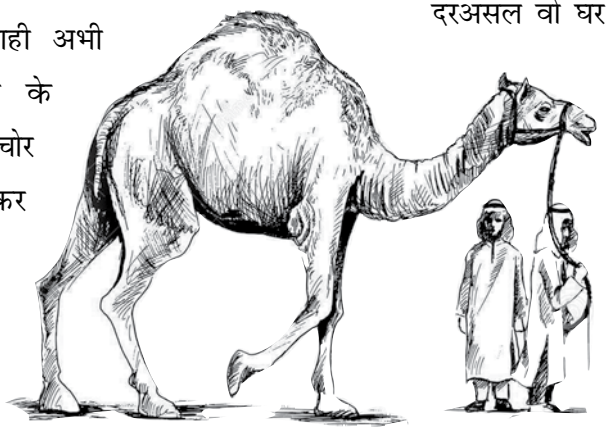

गांव में आदमी और जानवरों के पैरों के निशान पहचानने में कुछ ही लोग सिद्धहस्त होते है। उनमें से घम्मा और जैला इस कला के धनी थे सो दोनों को यह काम सौंपा गया। इस विशेष रुतबे से घम्मा ने लोगों को आदेश देना शुरू किया। मुझे बीच में दखलंदाजी बिलकुल पसन्द नहीं है। कोई भी हमारे आगे नहीं आयेगा। जो कहूं करते चलो। घम्मा अपने आप को किसी फिल्मी नायक से कम नहीं आंक रहा था। दोनों ने काम शुरू किया। आगे-आगे यह दोनों चले जा रहे थे और पीछे सारे गांव का हजूम। खोज लगाते लगाते यह लोग गांव से कोई पांच कोस दूर एक गांव में जाकर रुके। वहां गांव में घुसते ही एक बड़ा सा बाड़ा था। उसी बाड़े में ऊंट के पेरों के निशान जा रहे थे। जेला ने सभी को वही रोक दिया और खुद घम्मा को लेकर अंदर दाखिल हुआ। शोर गुल सुन एक औरत बाहर आई। उसने कहा क्या बात है? घम्मा आगे होकर बोला- "हमारा ऊंट चोरी हो गया है और उसकी खोज में तुम्हारे यहां आकर रुके हैं।" घम्मा ने रोब से कहा।

"हमें क्या पता था वो लोग चोरी कर ऊंट लायं हैं। दो आदमी थोड़ी देर पहले ऊंट के साथ यहां आये थे कह रहे थे कि वो मेले से आये है। उन्होंने हमसे पीने के लिये पानी मांगा था। पानी पीकर वो लोग ऊंट को लेकर इस दिशा में चले गये।" औरत ने अंगुली का इशारा करते हुए बताया।

दरअसल वो घर चोरों का ही था। उनको इस बात का पहले से अंदेशा था कि गांव वाले खोज लगाते हुए यहां तक पहुंच जांएगे सो उन्होंने ऊंट को दूसरे ठिकाने पर पहुंचा दिया था। चोरों की उस औरत ने इन लोगों को भ्रमित कर दूसरी दिशा में भेज दिया। थक हारकर सभी वापिस अपने गांव आ गये।

अगली रात से लोग पांच टोलियों में बंटकर पहरा देने लगे। सभी मुस्तैद थे। सर्दियां चरम पर थी ऊपर से ओस ने मौसम को और भी भयानक बना दिया था। धुंध इतनी छा जाती कि हाथ को हाथ दिखाई नहीं देता था। गांव में इसके बचाव के लिये कई जगह बड़े-बड़े लक्कड़ों में आग सुलगाई गई थी। पहरा देने वाले बीच-बीच में आकर यहां हाथ सेक लेते थे।

उन्हीं दिनों गांव में एक कुत्ते के शरीर पर ज्यादा घाव हो गये थे सो दिन भर वह कहीं खेतों में छुप कर

पड़ा रहता था ताकि मक्खियां परेशान न करें। रात को वह खाने की तलाश में इधर उधर भटकता। एक रात घम्मा और उसके साथी पहरा दे रहे थे। पास ही खड़े सरसों के खेत से सरसराहट की आवाज आई। घम्मा चौकन्ना हो गया। उसने ज्यादा विचार नहीं किया और निश्चित हो गया कि जरूर मुझे देखकर चोर खेत में छुप गये हैं। उसने अपने साथियों को खेत के आस पास तैनात कर गांव की तरफ जाकर जोर-जोर से हल्ला मचाना शुरू कर दिया। भागो चोर आ गये। लोग तो पहले से ही चोकश थे सो सुनते ही उसी दिशा की और तेजी से भागे। कुछ समय में खेत को चारों और से पूरे गांव ने घेर लिया। घम्मा शेखी बघार रहा था। मैंने अपनी आंखों से दो चोरों को इस खेत में घुसते देखा है। हालांकि घम्मा का बात बात में झूठ बोलना और तुरंत झूठी सौगंध खाना उसकी आये दिन की दिनचर्या का अभिन्न अंग था। ऐसा भी नहीं था कि इस बात से गांव के लोग अनभिज्ञ हों परन्तु संकट की इस घड़ी में उसकी बात पर अविश्वास करना एक बड़ा खतरा मोल लेना था।

गांव के रंगलाल पटेल और हरदयाल मास्टर ने लोगों से कहा कि हो सकता है चोरों के पास बंदूक हो सो बड़ी सावधानी से हमें काम लेना है। इस बात को सुनकर कंचन भागकर घर गया और अपनी देसी बारुद से चलने वाली एक नाली वाली बंदूक ले आया। उसमें बारूद के साथ साइकिल के छर्रे भी डाले गये। वो खेत के दक्षिण की ओर खड़ा हो गया। बाकी लोगों के हाथों में लाठी, गण्डासे और धारिये थे। चारों तरफ से खेत को चाक चौबंद कर दिया गया। घम्मा-लम्बे लम्बे डग भरता हुआ इधर से उधर टहल रहा है। सब लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हुए घम्मा कह रहा था - "साले के टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा, एक बार बस खेत से बाहर निकले।"

काफी देर हो गई लेकिन खेत में कोई हलचल नहीं हुई। लोगों में सुगबुगाहट होने लगी। क्या किया जाए? अगर अंदर घुसते है और चोरों ने धोखे से बंदूक से वार कर दिया तो बेमौत मारें जाएंगे। कोई भी खेत में घुसने को तैयार नहीं था। इसी कशमकश में कंचन ने कहा- "क्यों ना खेत के अंदर बंदूक से फायर किया जाये। या तो एक दो छर्रे चोरों के लग जाएंगे या फिर वो जान बचाने के लिये खेत से बाहर भागने की कोशिश करेंगे। उसी समय उन्हें दबोच लेगे।" सभी को यह बात सटीक लगी।

कंचन ने अपनी बंदूक से दो तीन फायर किये। फायर की आवाज से अंदर खेत में बैठा कुत्ता घबरा गया और डरकर खेत में इधर-उधर भागने लगा। खेत से जोर-जोर से सरसराहट की आवाज़ आने लगी। खेत में जिस तरफ से आवाज आती लोग उसी तरफ धावा बोल देते। जोर-जोर से लाठियों से खेत में प्रहार करते, उसकी आवाज सुनकर कुत्ता फिर विपरीत दिशा की और दौड़ने लगता। करीब घंटे भर तक यह तमाशा चलता रहा। कुत्ता बिलकुल घबरा गया था और खेत से निकलने की जुगत में था। जिधर घम्मा खड़ा था, किस्मत से कुत्ते को उधर से ही निकल भागने में कामयाबी मिल गई। घम्मा को कुत्ता तो दिखाई नहीं पड़ा था लेकिन बगल वाले गेहूं के खेत में उसके घुसने की आवाज जरूर सुनाई दी थी। वह जोर से चिल्लाया, भागो इस खेत में घुस गया चोर। लोगों ने उधर रुख किया। कुत्ता गेहूं के खेत के बीच में होकर जान बचाकर जोर से भाग रहा था। उस सरसराहट पर

कंचन ने फिर बंदूक से निशाना साधा। इस बार निसाना सीधे कुत्ते पर लगा। एक जोर की चीख के साथ ही कुत्ता वहीं ढेर हो गया। लोगों ने जब वहां जाकर देखा तो पता लगा कि यह तो खुजैला कुत्ता था। लोग घम्मा को बुरी तरह फटकारने लगे। यह सिलसिला चल ही रहा था कि गांव की तरफ से सोन्या दौड़ा-दौड़ा आया और कहने लगा- "अभी अभी चोर मेरी बकरी को उठा ले गये। एक घंटा पहले ही मैंने बकरी को बाहर चबूतरे से अंदर बांधा था।" इतना सुनते ही घम्मा फिर तैश में आ गया। कहने लगा - "यह लो मेरी बात कोई मान ही नहीं रहा था। तुम यहां कुत्ते को मारने में लगे रहे और चोर इस मौके का फायदा उठाकर बकरी को ले गये। मेरी बात उसी समय मान ली होती तो यह हादसा नहीं होता। अब भुगतो अपनी गलती को। "घम्मा के चेहरे पर ऐसी खुशी दौड़ रही थी मानो उसने कोई हारा हुआ किला दोबारा फतह कर लिया हो।

वास्तविकता यह थी कि सोन्या का मकान उस सरसों के खेत से लगा हुआ था। जब खेत में बंदूक से फायर किये जा रहे थे उसी समय बकरी डरकर इधर उधर भागने लगी। उसी भाग दौड़ में उसके गले से रस्सी खुल गई और वो जंगल की तरफ भाग गई। सुबह किसी ने आकर बताया कि सोन्या की बकरी को किसी जिनावर ने मार दिया और उसके अस्थि पंजर गांव के बाहर बड़े पीपल के नीचे पड़े हैं।

इस गांव से पांच कोस की दूरी पर एक गांव है डेरा। इस गांव में बाबूलाल नामक एक नौजवान है जो कभी कभार छोटी मोटी चोरी कर लेता है। वह पेशेवर चोर तो नहीं है लेकिन दारू और मांस के अपने शौक को पूरा करने के लिये वह आस पास के गांवों से भेड़ बकरियां चुरा लेता था। देखने में बांका जवान। कहते है आस-पास के दस पांच गांवों में उसके जैसा किसी का शरीर नहीं था। सौ किलो वजनी हष्ट-पुष्ट शरीर, बेशुमार ताकत का धनी, रौब दार लम्बी और घनी काली मूंछे और गोरा चिट्टा रंग उसके व्यक्तित्व को असाधारण बना देते थे। देखने में किसी रईस से कम नहीं लगता था।

सर्दियों के दिनों में दोपहर की धूप बहुत सुहावनी लगती है। बाबूलाल अपने घर के सामने खाट पर उस धूप का आनंद ले रहा था। मौसम के सुहावने पन का मजा वो खाट पर बैठे बैठे दारु की चुस्की के साथ ले रहा था। नशा अपने अंजाम पर पहुंचने ही वाला था। उसने अपनी घरवाली कमला से ऐसे मौसम में बेसन के पकोड़े बनाने की फरमाईस कर डाली। कमला को खेत में जाने के लिये देर हो रही थी सो उसने मना कर दिया। बाबूलाल का पारा सातवें आसमान पर जा पहुंचा। उठकर उसने कमला की बेरहमी से धुनाई कर दी। कमला लहुलुहान हो गई, यदि पड़ोस के लोग आकर नहीं बचाते तो शायद वो मर ही जाती। बाबूलाल वहां से कहीं जाने को खड़ा हुआ ही था कि गुस्से और क्षोभ से भरी हुई कमला ने उसे और जली कटी सुना डाली- "हरामजादे राम करे तू आज जिंदा ही वापस न लोटे।" सुनकर बाबूलाल फिर उसे मारने दौड़ा मगर इस बार पड़ोसियों ने बीच बचाव कर यह संकट टाल दिया।

बाबूलाल सीधा गांव से निकलकर पास ही के कस्बे मन्डावर में आ गया। वहां उसे उसका साला मिश्रा मिल गया। दोनों ने मिलकर वहां दारु पी उसके बाद वहां चल रही रामलीला देखने चले गये। रामलीला रात के बारह बजे खत्म हुई तो मिश्रा ने कहा "जीजा आज घर ही चलते हैं। तुम्हें भी हमारे यहां आये काफी दिन हो गये।"

"चले तो चले लेकिन तुम कुछ खातिरदारी तो करते हो नहीं।"

"ऐसी बात नहीं हैं तुम चलो तो सही तुम्हें इस बार बहुत बढ़िया मीट बनाकर खिलाउंगा।" मिश्रा ने प्रस्ताव रखा।

"फिर ठीक है। तब तो चलना ही पड़ेगा।" बाबूलाल ने स्वीकृति देते हुए चलने का उपक्रम किया। उनके पास एक दारु की बोतल भी बची रखी थी सो दोनों ने इसे रास्ते में पीने की सलाह कर ली। दोनों पैदल ही वहां से चल दिए। चलते चलते वे जटवाड़ा को मुड़ने वाली पगडंडी पर आकर रुक गये। दोनों ने वहां बैठकर दारु पी। बोतल खत्म होते ही दोनों को अच्छा खासा सरुर हो गया।

"जीजा यह सामने जो गांव है इसमें जोगियों के यहां काफी भेड़ बकरियां हैं। क्यों न एक उठा ले चले? सुबह बढ़िया दावत हो जायेगी।" मिश्रा ने झूमते हुए कहा।

"यह तो अच्छी बात याद दिलाई तुमने। चल अभी ले चलते है। इसमें सोचने वाली क्या बात है?" बाबूलाल ने मूछों पर हाथ फेरते हुए कहा। चोरी के इरादे से दोनों गांव की और चल दिए।

गांव के पूर्वी छोर पर स्कूल है और उसी से सटे जोगियों के चार पांच घर है। यहीं से गांव का मुख्य प्रवेश द्वार भी है। जोगियों के परिवार भेड़ बकरी पालने का ही काम करते हैं। इनके पास काफी तादाद में भेड़ बकरिया है जिन्हें रात को यह एक ग्वाड़े में बंद कर देते हैं।

रात में चारों ओर लोग बड़ी सजगता से पहरा दे रहे थे। सर्दी अपने चरम पर थी। इधर बाबूलाल और मिश्रा दोनों जोगियो के घर के सामने आ चुके थे। मिश्रा चौकीदारी के लिये बाहर रास्ते में ही खड़ा हो गया जबकि बाबूलाल अंदर ग्वाड़े में घुस गया। यह घर कन्हैया जोगी का था। उसकी पत्नी सुक्खो की अचानक नींद खुल गई और आहट सुन उसने कन्हैया को जगा दिया। बाबूलाल ने ग्वाड़े से एक भेड़ उठाई और बाहर जाने लगा। उसी समय कन्हैया और उसकी पत्नी सुक्खो ने उसे पीछे से आकर पकड़ लिया। चोर ने दोनों को उठाकर काफी दूर फेंक दिया और बाहर की तरफ भागने लगा। सुक्खो बड़ी ही हिम्मत वाली औरत थी। वो लपककर फिर से खड़ी हो गई और चोर के गुप्तांगों को जोर से पकड़ लिया ताकि वो भाग न पाये। उधर कन्हैया ने जोर-जोर से गांव वालों को आवाज लगा दी। चोर ने कन्हैया को उठाकर अपनी बगल में दबा लिया और सुक्खो उसके पीछे घिसटती हुई आ रही थी। वो दोनों को लेकर सामने के कुए पर चढ़ गया। तब तक सारा गांव वहां पहुंच चुका था। इस स्थिति को देखकर गांव वाले भी भोचक्के रह गये। चोर उन्हें कुएं में डालने के लिये ऊपर चढ़ा हुआ था। स्थिति की नाजुकता को देखकर गांव के हरदयाल मास्टर ने कहा - "इन्हें छोड़ दो हम तुम्हें कुछ नहीं कहेंगे।" चोर को अपनी जीत पर दम्भ होने लगा। उसने उन्हें छोड़ दिया और उतरकर जाने लगा। दारु का सरूर अक्सर आदमी में घमंड़ का भाव ला ही देता है और यही बाबूलाल की स्थिति थी। उसने मूंछो पर ताव देते हुए कहा - "लो तुम्हारा दामाद अब जा रहा है।" उसे अपनी ताकत पर बहुत गर्व था। गांव वाले तो पहले से ही चोरों के प्रति गुस्से से उफने जा रहे थे सो इतना सुनते सारा गांव उस पर गिद्ध की तरह टूट पड़ा। एक साथ अनगिनत लाठियां उस पर बरसने लगी। लाठियों का उस पर कोई खास असर नहीं हो रहा था। वो बार-बार खड़ा हो जाता था और जो भी उसके हत्थे चढ़ता उसे तिनके की तरह पकड़कर हवा

में उछाल देता था। कई लोगों को उसने अब तक घायल कर दिया था। उसे देखकर लगता था मानो कुम्भकरण वानर सेना के बीच खड़ा होकर उन्हें मसल रहा हो। काफी देर तक इसी तरह उठा पटक चलती रही मगर वो काबू में नहीं आ रहा था। भीड़ इतनी थी कि कई बार तो लाठियों के वार आपस में गांव वालों के ही लग जाते थे। हर कोई जोर आजमाई कर उसे मारने पर उतारू हो रहा था। आखिर मास्टर ने कहा थोड़ी जगह बनाओ और इसे बीच में लेकर इसके सिर पर मारो। गांव के छटे हुए कुछ नौजवनों को आगे किया जिन्होंने तड़ातड़ उसके सिर पर वार करना शुरू कर दिया। सिर के वार से उसकी खोपड़ी से एक तेज रक्त धार निकली जिसके छींटे कई आदमियो के कपडों को लाल कर गये। इसके बाद भी चोर बड़ी बहादुरी से गांव वालों का सामना करता रहा। कुछ लोगों ने रस्सियां लाकर उस पर ड़ाली जिसमें उसके पैर फंस गये जिससे वो जमीन पर गिर पड़ा। उसके बाद तो लोगों ने उसे उठने का मौका ही नहीं दिया।

सारा गांव पिछले काफी दिनों से चोरों से परेशान तो था ही सो सारे गांव के लोगों को ऐसे ही अवसर की चिर प्रतीक्षा थी। इन्हें लोग कुख्यात चोर काडू और जैलाल ही समझ रहे थे जिनके प्रति इनकी नफरत का कोई ओर छोर नहीं था।लोगों का गुस्सा सातवें आसमान पर था। इस समय सभी लोग मानवीय भावों को भूल से गये थे, उन्हें तो केवल काडू, जैलाल ही नजर आ रहे थे। हर कोइ उन्हें जान से मार देना चाहता था। मानवता, दया, धर्म और विवेक जैसे भावों के बजाय गांव वालों के चेहरे पर केवल एक ही इच्छा प्रबल थी वो थी चोरों की मौत। इसके आगे उन्हें कुछ दिखाई भी नहीं दे रहा था सभी के सिर पर रणचंडी नाच रही थी। रह रह कर जंगल से सियारों के चीखने और गांव से कुत्तों के रोने की आवाज आ रही थी।

दूसरी तरफ मिश्रा और किसन जोगी में स्कूल के आगे भिड़ंत हो रही थी। दोनों के काफी चोटें आ चुकी थी। पास ही खड़े कन्हैया जमादार ने मिश्रा के पैर में कुल्हाड़ी से वार किया जिससे उसका पैर टखने के पास से कट गया। वो वही दर्द से चीखता हुआ धड़ाम से गिर गया। उसी समय गांव का जेला वहां आ गया। उसने मिश्रा को पहचान लिया। जेला कई बार मिश्रा के गांव में उसके साथ दारु पी चुका था सो उस नाते उनमें थोड़ा याराना भी था। जेला ने कहा कि तू मरे के समान यहां स्कूल के मैदान में लेट जा। उसने वैसा ही किया। जेला ने लोगों से कहा कि एक चोर तो मर गया है अब वहां जाने की कोई जरूरत नहीं है सो लोगों ने उधर से ध्यान हटा लिया।

दूसरी ओर बाबूलाल को निर्ममता से गांव के रास्तों पर रस्सी से घसीटा जा रहा था साथ ही उस पर लाठियों की बरसात भी जारी थी। उसका शरीर ऐसा गदराया हुआ था कि लाठी पड़ते ही उछल जाती थी। उसे खींचते हुए बीच गांव में ले आये।। लोग मारते मारते थक गये लेकिन वो मरा नहीं। उसे बीच रास्ते में सीधा लिटा दिया और कुछ लोगों ने बगल में बने ओटरो पर चढकर बड़े-बड़े पत्थर उसके घुटनों और कुहनियों पर डालने शुरू कर दिए। उन पत्थरों के प्रहार से उसके घुटनों और कुहनियों के जोड़ खिसक-खिसक कर काफी नीचे चले गये। इतने से भी लोगों का मन नहीं भरा तो गांव के ही एक व्यक्ति ने उसके दोनों आंखों में नुकीली लकड़ियां डाल दीं जिससे उसकी दोनों आंखों फूटकर बाहर आ गई। इतनी यातनाओं के बावजूद भी चोर के मुंह से आह तक ना निकली। केसा हिम्मत वाला था वो? वो साक्षात मौत से दो-दो हाथ कर रहा था।

गांव के ही एक बुजुर्ग थे मीठू पटेल। अपने सिद्धान्तों पर वो अटल रहते थे। अपनी घरवाली के अलावा किसी के हाथ का वो खाना नहीं खाते थे। हिंसा के वो धुर विरोधी थे। उन्हें गुस्सा बहुत आता था। गुस्से में वे आग बबूला हो जाया करते थे। ऐसा लगता

था मानो इनके सिर कोई भूत प्रेत आ रहा हो। गांव में हो हल्ला सुन वे भी वहां आ गये। उन्होंने चोर की दशा देखी तो दिल में करुणा जाग उठी। वे भीड़ को चीरते हुए चोर के ऊपर हो लिये और उसे बचाने का असफल प्रयास करने लगे। ऐसे में उन्हें भी कई चोटे आ गई। कई प्रकार की सौगंध भी गांव वालों को उसने दी लेकिन लोग कहां मानने वाले थे। उनके सिर तो मौत नाच रही थी। उसे पकड़कर वहां से हटा दिया गया। वो काफी चीखते चिल्लाते रहे। उनके हृदय में करुणा और रोष के मिले जुले भाव थे। बार-बार वे गांव वालों की निर्ममता को धिक्कार रहे थे और साथ ही अपनी नाकामी पर भी वे काफी व्यथित थे।

रात के करीब साढे तीन बज चुके थे। पिछले ढाई घंटे से लोग उसे मारते-मारते थक गये थे परन्तु वो अभी भी जिंदा था। बाबूलाल को अब अपना आखिरी समय नजदीक दिखाई दे रहा था। वो एक वीर पुरुष था। उसे टूटना मंजूर था लेकिन झुकना मंजूर नहीं था। उसने एक बार भी गांव वालों से रहम की भीख नहीं मांगी। आखिरी समय को देख उसके मन का गर्व और अन्य विकार मिट चुके थे। उसका मन निर्विकार हो चुका था। अब उसे अपने शरीर की चिंता नहीं थी। उसे पता था कि उसका नश्वर शरीर कुछ ही देर में उसका साथ छोड़ देगा। उसके निर्विकार मन में उन लोगों के लिये दया और सहानुभूति का भाव उमड़ आया जो उसे मार मारकर थक चुके थे। उसके सूजे हुए होठ हिले और डबड़बाई आवाज में उसने भीड़ से कहा - "भाईयो तुम थक गये हो थोड़ी देर आराम कर लो। शायद इससे तुम दुगनी गति से मुझे मार सको।" इतना सुनते ही निर्दयी भीड़ ने उसे फिर से अनगिनत लाठियों से मारना शुरू कर दिया। गांव के जिस-जिस रास्ते से उसे घसीटा था वो खून से लथपथ हो रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो किसी सुंदरी या बड़ी रियासत के लिये भयंकर युद्ध हुआ हो। जगह-जगह उसे कुत्ते सूंघ कर चाटने की नाकामयाब कोशिश कर रहे थे। गांव में साक्षात रणचंडी नाच रही थी जो रक्त पिपासु थी। चोर को घसीटते,मारते हुए सुबह के साढे चार बज चुके थे। अब उसका शरीर निश्चेष्ट सा होने लगा था। सांसे भी अपनी रफ्तार भूलने लगी थी। हाथ और पैर पत्थरों के वार से ड़ेढ गुने हो गये थे। दोनों आंखों में पुतलियों की जगह जमें हुए खून ने ले ली थी।

आखिरी बार बाबूलाल कुछ कहने की कोशिश कर रहा था। उसके मुंह से मद्दिम स्वर में अस्पस्ट शब्द निकलने लगे। वो कह रहा था - "भाईयो मैं तो अब कुछ ही पलो का मेहमान हूं। तुमसे मेरी आखिरी विनती है कि मेरे बच्चों से यह जरूर कह देना कि तुम्हारा बाप मौत से डरा नहीं। उसने साक्षात मौत से खुशी-खुशी दो दो हाथ किये थे। मौत उसे हरा न सकी वरन मौत ने उसका सहर्ष वीरों की भांति वरण किया था। तुम लोगों से मुझे कोई गिला शिकवा नहीं है सभी को मेरी राम राम।" कहते-कहते बाबूलाल को जोर की हिचकी आई और वो इस संसार से बिदा हो गया।

लोगों ने देखा कि उसके प्राण पखेरु उड़ गये है। उसी समय मास्टर ने कहा कि यह तो पुलिस केस बनेगा। पुलिस का नाम लेते ही लोगों के मुंह पर हवाइयां उड़ने लगी। सारा गांव लपेटे में आयेगा। सभी लोग मास्टर का मुंह ताक रह थे। तभी रंगलाल पटेल ने कहा कि मास्टर जी अब क्या किया जाये? मास्टर कहने लगा कि सबसे पहले तो गांव के रास्तों से सारे खून के दाग धब्बे साफ किये जाएं। उसके बाद तय हुआ कि पुलिस केस के लिये पैसों कि जरूरत पड़ेगी सो प्रत्येक घर से सौ रुपये के हिसाब से अभी उगाई की जाये। थोड़ी ही देर में सोलह हजार रुपये इकट्ठे हो गये। सभी को हिदायत दी गई कि सब अपने अपने घरों में जाकर औरतों और बच्चों से कह दे कि यदि पुलिस कुछ भी पूछे तो कह देना हम तो सो रहे थे। हमें कुछ पता नहीं। कालरात्रि समाप्त हुई। भोर की प्रथम किरण

के साथ ही पेडों पर बैठे पक्षियों का कलरव बढ़ गया। ऐसा लग रहा था मानो यह पक्षी किसी वीर पुरुष को श्रद्धांजली दे रहे हों। प्रभात के उजाले में लोगों ने देखा तो देखते ही रह गए। केसा बांका जवान था वो। उसे स्कूल के पास जमीन पर लिटा रखा था। टेरिकोट का सफेद कुर्ता रक्त रंजित था। उसकी देह ऐसे लग रही थी मानो किसी योद्धा के ऊपर गुलाल अबीर डाल रखी हो। जिसने भी देखा मुंह से आह ही निकलती थी। जब लोगों का भ्रम दूर हुआ कि यह काडू, जैलाल नहीं थे तो लोगों को उसकी मौत पर बहुत पछतावा हुआ।

– विजय सिंह मीना
निदेशक (रा.भा.)
जल शक्ति मंत्रालय

राजभाषा गतिविधियां

- संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 02.03.2022 को वाप्कोस के भोपाल कार्यालय का इंदौर में राजभाषाई निरीक्षण किया गया। इस निरीक्षण कार्यक्रम में वाप्कोस भोपाल कार्यालय व मुख्यालय से निम्नलिखित अधिकारी समिति के समक्ष उपस्थित थे:-
  - श्री राजेश गेहानी, परियोजना प्रबन्धक, भोपाल कार्यालय
  - श्री प्रेम प्रकाश भारद्वाज, प्रमुख (कार्मिक व रा.भा.का.)
  - श्री दलीप कुमार सेठी, प्रबन्धक (रा.भा.का.)
- दिनांक 11.03.2022 को श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वा.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता में वाप्कोस की विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई।
- दिनांक 14.03.2022 को वाप्कोस में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस हिंदी कार्यशाला में जल शक्ति मंत्रालय के श्री विजय सिंह मीना, निदेशक (रा.भा.) को आमंत्रित किया गया जिन्होंने कार्यशाला में उपस्थित सभी कार्मिकों को राजभाषा नियमों व अधि नियमों की जानकारी दी तथा वाइस टाइपिंग का प्रशिक्षण भी दिया। इसके साथ-साथ उन्होंने कार्मिकों को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के वर्ष 2021-22 के वार्षिक कार्यक्रम में दिये गए निर्धारित लक्ष्यों के बारे में जानकारी भी दी।
- राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी स्थिति का जायजा लेने हेतु श्री दलीप कुमार सेठी, प्रबन्धक (रा.भा.का.) द्वारा दिनांक 09.03.2022 को वाप्कोस के जल संसाधन प्रभाग, दिनांक 23.03.2022 को पर्यावरण प्रभाग, दिनांक 24.03.2022 को पुस्तकालय तथा दिनांक 11.02.2022 को वाप्कोस के जल प्रबन्धन प्रभाग के राजभाषाई निरीक्षण किये गए।

– दलीप कुमार सेठी
उप मुख्य प्रबंधक (रा.भा.का.)

महिला सुरक्षा-एक पहल

आज हम उस दौर से गुजर रहे हैं, जहाँ हमें नारी को समान अधिकार के साथ-साथ उसे सुरक्षा प्रदान करने की आवश्यकता है। महिलाओं को एक ओर अधिकार प्राप्त हो रहें हैं, वहीं दूसरी और हम उनकी सुरक्षा में कहीं न कहीं चूक कर रहे हैं। आज हमें पूरे समाज के साथ मिलकर नारी की सुरक्षा के लिए और उसके आत्म-सम्मान की रक्षा के लिए एक जुट होकर काम करने की आवश्यकता है।

जरा सोचिए! एक महिला ही बेहतर समाज का निर्माण करती है, इस दौरान वह माँ, बहन पत्नी जैसे कई अन्य रूप में समाज का निर्माण करती है, अपना पूरा जीवन परिवार के लिए और बेहतर समाज निर्माण में समर्पित कर देती है। अगर अब भी हम उसकी सुरक्षा नहीं कर पा रहें हैं तो कहीं न कहीं कमी पुरूषों में ही है। समाज के सभी पुरूषों का यह दायित्व बनता है कि वो प्रत्येक महिला को हर समय हर जगह जैसे भी हो उसकी सुरक्षा करें, उसको विश्वास दिलाऐं कि वह अकेली नहीं है, हम उसके साथ हैं। अगर हम यह सोच कर महिलाओं की मदद करें कि वह हमारे परिवार का ही हिस्सा हैं और उनको सहयोग प्रदान करें, साथ ही उसके आत्म सम्मान की रक्षा करें। हमें यह समझना चाहिए कि कहीं न कहीं वह हमारे परिवार का ही हिस्सा है और हमें विश्व की हर महिला के साथ साहस के साथ खड़े रहना चाहिए।

बेटी भार नहीं, आधार है भारत की !
जीवन है उसका अधिकार,
बेहतर शिक्षा ही उसका हथियार !!

हमें पूरे राष्ट्र और सभी भारतीयों को परिवार की तरह समझना चाहिए। सभी धर्मों से ऊपर राष्ट्र वाद और देश भक्ति हैं, महिलाएं राष्ट्र निर्माण में स्वंय को समर्पित कर देती हैं, फिर चाहे वो प्रशासनिक क्षेत्र हो, सैन्य क्षेत्र हो या फिर सुरक्षा क्षेत्र हो। जब महिलाऐं राष्ट्र निर्माण के लिए स्वंय को समर्पित कर सकती है, तो हम क्यों नहीं उनकी सुरक्षा के लिए एक जुट होकर महिलाओं के प्रति बढ़ रहे अपराधों को रोकें।

पुरूष वर्ग को हर महिला की सुरक्षा अपने घर से, अपने परिसर से और अपने गाँव या नगर से शुरूआत करने की आवश्यकता है। एक बात और है, जो महिलाओं की सुरक्षा में कमी लाती है, वह हमारी सोचने की क्षमता है जब तक हम सकारात्मक सोचेंगे नहीं तब तक हम एक बेहतर समाज और राष्ट्र का निर्माण कैसे करेगें। नारी की भूमिका राष्ट्र निर्माण और समाज निर्माण में सबसे अधिक है। भारत सरकार के कुछ अधिनियम महिलाओं को सुरक्षा प्रदान करते हैं, लेकिन हमें आज उनको पूर्ण रूप से क्रियान्वयन करने कि आवश्यकता है। मैं जहाँ तक समझता हूँ कि भारत एक ऐसा देश है जहाँ महिला को शक्ति अर्थात् देवी का रूप कहा जाता है, लेकिन जब वह ही शक्ति अपनों से असहज महसूस करेगी तब वह कैसे अच्छे समाज निर्माण और राष्ट्र निर्माण की नींव रखेगी। हमेशा नारी ही समाज की नींव रखती है, राष्ट्र निर्माण में सबसे अधिक योगदान एक नारी का ही होता है। एक बात और है, जब एक नारी दूसरी नारी की सुरक्षा करने में सहयोग करेगी तो महिलाओं में एकता और समर्पण

का भाव जागृत होगा। भारत सरकार और राज्य सरकार द्वारा चलाये जा रहे महिला सशक्तिकरण अभियान को और तेज किये जाने की आवश्यकता है। इस अभियान को निचले स्तर से क्रियान्वयन करने की आवश्यकता है ताकि यह हर गांव, हर गली, हर मोहल्ले तक पहुँच सके। जब हम महिलाओं को सशक्त करने के लिए निचले स्तर से संगठित करेगें, तब हम एक नया परिणाम देखेगें। आप स्वयं विचार कीजिए अगर हम महिलाओं को जागरूक करेगें, उन्हें शिक्षित करेगें और प्रत्येक महिला की जन भागीदारी बढायेगें तो वह स्वंत: ही समाज निर्माण की नींव रखेगी। अगर महिला खुले मन से विचार करेगी, अपने परिवार को अच्छे संस्कार प्रदान करेगी तो हमेशा एक बेहतर समाज का निर्माण होगा। अपने परिवार और आस पास के वातावरण को इतना सुलभ बनाने की आवश्यकता है जिससे महिलाए स्वतंत्र रूप से विचार कर सकें। आज हम देखते हैं कि महिलाओं के लिए अधिकारों का प्रावधान तो है कि लेकिन वह क्रियान्वयन बेहतर ढंग नहीं हो रहें हैं। आज हमें भारत सरकार के सभी अधिकार जो महिलाओं के अधिकारों की बात करते हैं और वह अधिनियम जो महिलाओं को सुरक्षा प्रदान करते है, हमें उन सबका बेहतर तरीकों से क्रियान्वयन करने की आवश्यकता है। हमें इन अधिनियमों को प्रशासन की सबसे छोटी ईकाई से क्रियान्वयन करने की आवश्यकता है। जिससे महिलाएं समानता और सुरक्षा जैसे अधिकारों का सही उपयोग कर पायेगीं और प्रत्येक महिला सशक्त होगी और अपराधों में स्वत: ही कमी आ जायेगी। समाज के प्रत्येक वर्ग की महिलाओं को समान अधिकार और समान सुरक्षा प्रदान किया जाना आवश्यक हैं। हम गर्व महसूस करते हैं, जब एक महिला बेहतर समाज निर्माण और राष्ट्र निर्माण में स्वंय को समर्पित कर देती है, लेकिन आज हमें भी महिलाओं की सुरक्षा एवं समान अधिकार के लिए नि:स्वार्थ भाव से समर्पित होने की आवश्यकता है। अगर हम महिलाओं के प्रति सजग और सावधान रहेगें तो महिलाओं के ऊपर होने वाले अत्याचार स्वत: ही धीरे-धीरे समाप्त हो जायेगें।

भारत सरकार द्वारा संचालित की जाने वाली कुछ महत्वपूर्ण योजनाऐं जिनकी महिला सशक्तिकरण में अहम भूमिका रहती है जो इस प्रकार है- **बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं, वन स्टॉप सेन्टर योजना, महिला हेल्प लाइन योजना, उज्जवला योजना, स्वाधार गृह नारी शक्ति पुरस्कार, निर्भया, महिला पुलिस वालंटियर्स एवं महिला शक्ति केन्द्र** आदि महत्वपूर्ण योजनाऐं भारत सरकार द्वारा संचालित कि जाती हैं। महिला सशक्तिकरण के लिए म.प्र. सरकार द्वारा चलाई जा रही निम्न योजनाऐं इस प्रकार हैं- **बेटी बचाओं योजना, लाड़ली लक्ष्मी योजना, लाड़ो अभियान, शौर्या दल, मंगल दिवस योजना, स्वागतम लक्ष्मी योजना, ऊषा किरन योजना, गाँव की बेटी योजना, शिक्षा प्रोत्साहन योजना** सम्मिलित है, और इसी क्रम में आगे बढ़ते हुए हम कुछ महिलाओं के बारे में बात करते हैं, जो अन्य महिलाओं के लिए एक मिसाल हैं- माननीय **श्रीमती सुषमा स्वराज** (पूर्व विदेश मंत्री), **माननीय निर्मला सीतारामण** (वित्त मंत्री), **श्रीमती स्मृति ईरानी** (महिला बाल विकास एवं कपडा मंत्री), **माननीय साध्वी निरंजन ज्योति** (केन्द्रीय राज्य मंत्री), **ले0 जनरल माधुरी कानिटकर, पी.वी. सिंधु** (बैडमिन्टन खिलाड़ी), **एम.सी. मेरीकॉम** (बॉक्सिंग खिलाड़ी), **दुतिचन्द** एवं **हिना दास** (एथलीट) इत्यादि शामिल हैं।

– राजेश कुमार
(अभियंता)
परियोजना कार्यालय, भोपाल

वाप्कोस गुरुग्राम कार्यालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजन

वाप्कोस में गुरुग्राम कार्यालय के समिति कक्ष में दिनांक 14.03.2022 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस हिंदी कार्यशाला में जल शक्ति मंत्रालय के श्री विजय सिंह मीना, निदेशक (रा.भा.) को आमंत्रित किया गया। श्री विजय सिंह मीना जी ने हिंदी कार्यशाला में उपस्थित सभी कार्मिकों को वाइस टाइपिंग का प्रशिक्षण दिया।

वाइस टाइपिंग का प्रशिक्षण देने के उपरान्त उन्होंने सभी कार्मिकों को राजभाषा नियमों व अधिनियमों के बारे में जानकारी दी। इसके साथ-साथ उन्होंने कार्मिकों को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के वर्ष 2021-22 के वार्षिक कार्यक्रम में दिये गए निर्धारित लक्ष्यों के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि इन लक्ष्यों को प्राप्त करना सभी कार्मिकों की जिम्मेदारी है।

विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

मार्च, 2022 को समाप्त तिमाही के अन्तर्गत विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की एक बैठक करवाई जानी अपेक्षित होती है। इसी अनुक्रम में दिनांक 11.03.2022 को वाप्कोस की विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वा.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

उक्त बैठक में समिति के निम्नलिखित सदस्यों/प्रतिनिधियों ने भाग लिया:-

नाम व पदनाम सर्वश्री/श्रीमती/कुमारी	प्रभाग का नाम
आलोक वार्ष्णेय, उप मुख्य प्रबंधक	वित्त प्रभाग
नेहा अमर्या, वरि.अभियंता	सिविल डिजाइन
सौरभ मंदिलवाल, अभियंता	इलै.-मैकेनिकल प्रभाग
संगीता झा, प्रबंधक	हाइड्रो-पावर
विजय कुमार गौतम, उप प्रबंधक	निर्माण प्रबंधन प्रभाग
रजनी अरोड़ा, प्रणाली अधिकारी	अवस्थापना प्रभाग
आस्था सिंघला, सहा. कार्या. प्रबंधक	सतर्कता प्रभाग
गिरीश, उप प्रबंधक	बांध व जलाशय प्रभाग
अपूर्वा अग्रवाल, वरि. अभियंता	पर्यावरण प्रभाग
गोकुल प्रजापति, वरि. अभियंता	प., बं. व अं.ज.मार्ग
सतीश चन्द, प्रबंधक	कार्मिक प्रभाग
हरीश कुमार, वरि. अभियंता	जल संसाधन विकास
वोनिशा, वरि. अभियंता	आई.टी. प्रभाग
अक्षय भारद्वाज, सहायक प्रबंधक	प्रशासन प्रभाग
उर्वशी बिष्ट, कार्यालय सहायक	जल प्रबंधन प्रभाग
गिरीश चन्द्र जोशी, स.का.प्रबंधक	आर.यू.डी.
राम केवल, कनि. सहायक	वित्त प्रभाग
गीता शर्मा, उप प्रबंधक	हिन्दी अनुभाग
दलीप कुमार सेठी, प्रबंधक	हिन्दी अनुभाग
प्रेम प्रकाश भारद्वाज प्रमुख (कार्मिक व रा.भा.का.) एवं सदस्य सचिव	हिन्दी अनुभाग

कविता

कोई समय बेचता है
कोई श्रम बेचता है
कोई ईमान बेचता है
तो कोई धर्म बेचता है।

कोई सम्मान बेचता है
कोई इज्जत बेचता है
बैठकर परदे के पीछे
अपना देश बेचता है।

क्या-क्या खरीदें और
किसको कितना खरीदे
बिकने वाले तो साबुत
बिकने को तैयार बैठें है।

-मोहर सिंह मीणा
फील्ड अटेंडेंट
भोपाल कार्यालय

नर्मदा नदी में बड़वानी प्वाइंट से स्टैच्यू ऑफ यूनिटी तक क्रूज पर्यटन के विकास के लिए अध्ययन

पृष्ठभूमि

भारत में रिवर "क्रूज टूरिज्म" उद्योग एक तेजी से बढ़ता हुआ घटक है और इसमें महत्वपूर्ण अप्रयुक्त क्षमता है क्योंकि समृद्ध सांस्कृतिक और वन्यजीव विरासत वाले भौगोलिक क्षेत्रों के माध्यम से कई नदियां बहती हैं। भारत की अर्थव्यवस्था के निरंतर विकास, बढ़ते मध्यम वर्ग और बढ़ती डिस्पोजेबल आय के साथ, जो अवकाश गतिविधियों पर खर्च की जा सकती है, समग्र वातावरण देश के भीतर नदी क्रूज पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए अनुकूल है। हालांकि, अन्तर्राष्ट्रीय मानक क्रूज सुविधाओं की उपलब्धता की कमी के कारण, भारत में नदी क्रूज पर्यटन को बढ़ावा देने के प्रयासों और प्रक्रियात्मक बाधाओं को सीमित सीमा तक खोजा गया है। भारत में नदी क्रूज पर्यटन के वर्तमान परिदृश्य में, नदी परिभ्रमण वर्तमान में केरल में एलेप्पी के बैकवाटर में, गंगा नदी और ब्रह्मपुत्र

चित्र: राजघाट बड़वानी के पास प्रस्तावित टर्मिनल स्थान

नदी के एक विस्तृत खंड में चल रहे हैं। गंगा नदी (NW-1), ब्रह्मपुत्र नदी (NW-2), WCC नहर, उद्योगमंडल नहर, चंपक्करा नहर (NW-3), अलाफुजा – चंगनास्सेरी नहर (NW-8), अलाफुजा – कोट्टायम – अथिरम्फुजा नहर (NW-9), सुंदरबन जलमार्ग (NW-97) और जलमार्ग के इंडो बांग्लादेश प्रोटोकॉल रूट वर्तमान में क्रूज नौकायन के लिए चालू हैं। इन जलमार्गों पर क्रूज पर्यटन को संभालने वाले कई निजी ऑपरेटर हैं। क्रूज ऑपरेटर ज्यादातर बुनियादी ढांचे के साथ अपने पोत बर्थिंग के लिए आईडब्ल्यूएआई निर्मित टर्मिनल का उपयोग कर रहे हैं।

परियोजना के बारे में

मध्य प्रदेश पर्यटन बोर्ड ने मध्य प्रदेश में बड़वानी को गुजरात में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी से जोड़ने वाले नदी क्रूज पर्यटन की संभावना का पता लगाने के लिए वाप्कोस लिमिटेड को सलाहकार के रूप में नियुक्त किया है। मध्य प्रदेश पर्यटन बोर्ड ने नदी मार्ग का उपयोग करके स्टैच्यू ऑफ यूनिटी/सरदार सरोवर बांध को बड़वानी से जोड़ने की योजना बनाई है।

ट्रैफिक अध्ययन के प्रारम्भिक दौर में यह पता चला है कि मौजूदा सरदार सरोवर बांध लगभग 58,000 की औसत मासिक पर्यटक फुटफॉल के साथ एक पर्यटक आकर्षण था। सरदार पटेल की प्रतिमा (स्टैच्यू ऑफ यूनिटी) के निर्माण से मासिक पर्यटकों की संख्या बढ़कर 2,66,000 हो गई है।

नर्मदा नदी में शिव का एक जलमग्न मंदिर है, जिसे गुजरात में हनफेश्वर मंदिर के नाम से जाना जाता है। छोटी मोटर चालित नावों से बड़ी संख्या में पर्यटक मंदिर आते हैं। नदी के किनारे धार्मिक स्थलों के साथ कई घाट हैं। स्टैच्यू ऑफ यूनिटी से बड़वानी तक एक

चित्र: स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के पास सरदार सरोवर बांध के ऊपर की ओर प्रस्तावित टर्मिनल

नदी क्रूज मध्य प्रदेश की धार्मिक, सांस्कृतिक और जनसांख्यिकीय विरासत को बढ़ावा देगा।

मध्य प्रदेश पर्यटन द्वारा विकसित प्रस्तावित नदी परिभ्रमण से राज्यों और देशों के ऐतिहासिक महत्व के बारे में जागरूकता पैदा होने की संभावना है।

बड़वानी इंदौर से लगभग 160 किमी. की दूरी पर स्थित है। इंदौर 7 मंजिला रजवाड़ा पैलेस, लाल बाग पैलेस और कई अन्य स्मारकों के लिए प्रसिद्ध है।

निष्कर्ष

कई नदियां, विश्व स्तर पर, एक पूर्ण नदी क्रूज उद्योग है। मध्य प्रदेश पर्यटन द्वारा विकसित प्रस्तावित नदी परिभ्रमण से राज्यों और देशों के ऐतिहासिक महत्व के बारे में जागरूकता पैदा होने की संभावना है। इस प्रकार, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी को बड़वानी के जलमार्ग से जोड़ने से मध्य प्रदेश के कई ऐतिहासिक स्थानों पर क्रूज पर्यटन यातायात भी आकर्षित होगा। यह पर्यटकों को संभालने के लिए स्थानीय नाव संचालकों, होटल व्यवसायियों, स्थानीय टूर गाइड और रेस्तरां संचालकों के प्रशिक्षण के माध्यम से कुशल / गैर कुशल रोजगार प्रदान करेगा। इससे स्थानीय बाजारों यानी हस्तशिल्प को भी लाभ होगा। गुजरात में सरदार सरोवर बांध पर स्टैच्यू ऑफ यूनिटी से मध्य प्रदेश के बड़वानी तक नौकायन करते समय नदी के दोनों किनारों पर पर्यटकों को प्रकृति की प्राकृतिक सुंदरता का आनंद मिलेगा। मध्य प्रदेश में पर्यटन उद्योग राजस्व का एक प्रमुख रूप है। बड़वानी और स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के बीच रिवर क्रूज के विकास से पर्यटन उद्योग से मौजूदा राजस्व सृजन, रोजगार सृजन आदि में वृद्धि होगी।

– गोकुल प्रजापति
वरिष्ठ अभियंता
पत्तन, बन्दरगाह एवं अंतर्देशीय जलमार्ग प्रभाग

कविता

कल एक झलक जिन्दगी को देखा,
वो राहों पे मेरी गुनगुना रही थी,

फिर ढूंढ़ा उसे इधर-उधर
वो आँख मिचौली कर मुस्कुरा रही थी,

एक अरसे के बाद आया मुझे करार,
वो सहला के मुझे सुला रही थी

हम दोनों क्यों खफा हैं एक दूसरे से
मैं उसे और वो मुझे समझा रही थी

मैंने पूछ लिया- क्यों इतना दर्द दिया कमबख्त तूने,
वो हंसी और बोली- मैं जिन्दगी हूँ पगले
तुझे जीना सिखा रही थी।

–प्रमीला कुशवाहा
डी.ई.ओ.
वाप्कोस लिमिटेड, भोपाल

उड़े तिरंगा

उड़े तिरंगा उड़े तिरंगा शान है ये भारत की
तीनों रंग जुड़े हैं इसमें, ताकत है ये एकता की।
देश भक्ति दिलों में जगाये, जहाँ भी रहे हम धरती पे
मन मोहक एक भाव जगाये, जब उड़े तिरंगा शान से।
लहराते उड़े जैसे ये, कली खिली हो नीली अंबर में
चारों तरफ फैलता है ये, हवा चले अभिमान की।
इतनी उभरे भक्ति दिल में, हर कोई इसका गुलाम है
उठ खड़े सब सैल्यूट करते, ताज है ये भारत का।
गली से लेकर दिल्ली तक, भारत से लेकर अंतरिक्ष तक
हर जगह लहराता तिरंगा, भारत माँ का गर्व है।
जन गन मन गीत गाते, उड़े तिरंगा शान से
सर उठाके खड़े हैं हम सब, गौरव भरे भाव से।
स्वाभिमान की पहचान है ये, जब बात आए मातृभूमि की
बहादुरी का सम्मान चिह्न है, जब ओढ़े वीर शहीदों पे।
इसकी शान ना जाने पाये, ऊंचा रहे यह कर्तव्य है
उड़े तिरंगा उड़े तिरंगा स्वतंत्रता की हवाओं में
जय-जयकार मचा है हर तरफ, भारत माँ की पहचान है
भारत माँ के लाडले हम सब, इच्छा इसका गौरव है।
क्या क्या देखा, सहा तिरंगा, भंडार है किस्सा बलिदानों का
न्यौछावर थे प्राण कितने, इसकी गौरव रक्षा में।
कितने योद्धा मर मिट गये, आजादी की कामना में
स्वतंत्रता का गुरूर ना छोड़ा, शान्ति, विनम्रता इसका लक्षण है।
हार-जीत, सुख-दुःख का मेल, यह है चरित्र तिरंगे का
उड़े तिरंगा उड़े तिरंगा शान है ये भारत की।

- सी.एच. उदयश्री
डी.ई.ओ. (हैदराबाद कार्यालय)

स्वच्छता अभियान 2022

स्वच्छ भारत का सपना महात्मा गाँधी जी ने देखा था। अपने सपने के संदर्भ में गाँधी ने कहा कि स्वच्छता स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी है और स्वच्छता ही स्वस्थ और शांतिपूर्ण जीवन का एक अनिवार्य भाग है। स्वच्छ भारत अभियान को 2 अक्टूबर, 2014 को महात्मा गाँधी जी के जन्म दिवस के शुभ अवसर पर शुरू किया गया था और 2 अक्टूबर, 2019 तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया था। स्वच्छ भारत अभियान को सरकार द्वारा देश की स्वच्छता के प्रतीक के रूप में शुरू किया गया है। इस अभियान को सफल बनाने के लिए सरकार ने सभी लोगों से निवेदन किया कि वे अपने आस-पास की और दूसरी जगहों की सफाई के लिए साल में केवल 100 घंटों के लिए अपना योगदान दें।

वाप्कोस लिमिटेड में जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय के

आदेशानुसार दिनांक 16.3.2022 से 31.3.2022 तक स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया। जिसमें वाप्कोस के सभी कार्यालयों द्वारा कार्य योजना, 2022 के अनुसार स्वच्छता गतिविधियां करने हेतु स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया।

विश्व जल दिवस 2022 के अवसर पर दिनांक 22 मार्च 2022 को छठ घाट, यमुना नदी, नई दिल्ली में वाप्कोस व एनपीसीसी द्वारा स्वच्छता अभियान आयोजित किया गया। श्री पंकज कुमार, सचिव, ज.सं., न.वि. और गं.सं. विभाग, जल शक्ति

मंत्रालय ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की और कार्यक्रम के दौरान उपस्थित सभी कर्मचारियों को विश्व जल दिवस की शपथ दिलाई। इस अवसर पर श्री जी.अशोक कुमार, महानिदेशक, एनएमसीजी, श्री आर.के. अग्रवाल, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस और एनपीसीसी तथा मंत्रालय, वाप्कोस और एनपीसीसी के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

कविता

मैं तलवार खरीदूगां माँ
या मैं लूंगा तीर-कमान

जंगल में जा, किसी ताड़का
को मारूगां राम समान

तपस्वी यज्ञ करेंगे, असुरों
को मैं मार भगाऊंगा

यों ही कुछ दिन करते-करते
रामचन्द्र बन जाऊंगा।

-महेन्द्र वर्मा
फील्ड सहायक, भोपाल कार्यालय

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2022

नारी ईश्वर की एक ऐसी कृति है जिसके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। नारी में मातृत्व का गुण है। नारी पुरूष की प्रतिद्वन्दी नहीं अपितु पुरूष की पूरक व सहयोगी है। आज महिलाएं विश्वपटल पर अपनी बुद्धिमता, दूरदर्शिता, अथक परिश्रम व अद्भुत साहस के साथ अपनी पहचान बनाने में सफल हुई हैं। उसमें अथाह शक्ति व क्षमताएं विद्यमान हैं। आज विश्व स्तर पर कामकाजी महिलाएं घर व बाहर दोहरी भूमिका निभा रही हैं। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस हर वर्ष हमें विश्वस्तर पर अतीत व वर्तमान की महिलाओं की उपलब्धियों को प्रतिबिंबित करने का अवसर प्रदान करता है।

इस वर्ष अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक जी के मार्ग दर्शन में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2022 वाप्कोस और एनपीसीसी की महिला कार्मिकों द्वारा संयुक्त रूप से दिनांक 08.03.2022 (मंगलवार) को दोपहर 01.30 बजे से वाप्कोस कार्यालय परिसर, 76-सी, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर 18, गुरूग्राम में आयोजित किया गया जिसका शीर्षक 'वुमन-फ्लैग बीयरर्य ऑफ इंडिया' था।

प्रजापति ब्रह्म कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा 'वुमन-फ्लैग बीयरर्य ऑफ इंडिया' शीर्षक पर प्रेरणादायक व्याख्यान दिया जिसमें स्वयं को, अपने आंतरिक संसाधनों और शक्तियों को समझने में ध्यान केंद्रित किया गया। इसके बाद महिला कर्मचारियों का अभिनंदन किया गया।

वाप्कोस और एनपीसीसी के दिल्ली व गुड़गांव कार्यालयों में कार्यरत सभी महिला कार्मिकों ने इस समारोह में उमंग व उत्साह से भाग लिया।

◆◆◆

साहसी

न वस्त्र है न शस्त्र हैं न हाथ है न पैर
जिन्दगी की राह पर जो कर सकें न सैर

एक पत्र छांह भी जिन्हें मिल सकी न आज
पुकारे वो मसीहा सुनें कोई आवाज

हिम्मत है उनमें ताकत है वही है बुलन्दियों के सरताज
अपनी किस्मत खुद लिखते हैं

काम नहीं है वे आसां झुग्गी झोंपडी में रहकर भी
हष्ट पुष्ट रहते हैं जो एक पल भी जो अपनी
किस्मत पे नही रोते हैं

जो हर मुश्किल का डटकर सामना करते हैं
जो वो अपनी मेहनत और लगन से राष्ट्र सुसज्जित करते हैं।

-राम कुमार
फील्ड अटेंडेंट
वाप्कोस लिमिटेड, भोपाल

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा वाप्कोस भोपाल कार्यालय का निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति लोकसभा के बीस एवं राज्यसभा के दस सदस्यों को मिलाकर गठित की जाती है। इस समिति को सुविधा की दृष्टि से तीन उप-समितियों में बांटा गया है। हमारा उपक्रम दूसरी उप समिति के अन्तर्गत आता है।

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 2 मार्च, 2022 को वाप्कोस के भोपाल कार्यालय का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान समिति का नेतृत्व उप संयोजक माननीय श्रीमती रीता बहुगुणा जोशी, संसद सदस्य (लोक सभा),

महोदया द्वारा किया गया। निरीक्षण में संसदीय समिति की उप संयोजक महोदया के साथ माननीय सदस्य श्रीमती रंजनबेन धनंजय भट्ट, संसद सदस्य (लोक सभा), श्री सुशील गुप्ता, सदस्य (राज्य सभा), श्रीमती माला, राज्य लक्ष्मी शाह, संसद सदस्य (लोक सभा) और श्री ज्योतिर्मय सिंह महतो, संसद सदस्य (लोक सभा) के अलावा समिति सचिवालय के अधिकारी भी उपस्थित थे।

इस निरीक्षण कार्यक्रम में निम्नलिखित अधिकारी उपस्थित थे:-

वाप्कोस भोपाल कार्यालय

1. श्री राजेश गेहानी, परियोजना प्रबंधक

वाप्कोस मुख्यालय

1. श्री प्रेम प्रकाश भारद्वाज, प्रमुख (कार्मिक व रा. भा.का.)
2. श्री दलीप कुमार सेठी, प्रबन्धक (रा.भा.का.)

वाप्कोस के लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजन

वाप्कोस लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय में दिनांक 12 मार्च, 2022 को राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने तथा राजभाषा संबंधी अधिनियमों, नियमों एवं आदेशों के अनुपालन हेतु हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने प्रतिभाग किया। कार्यशाला का संचालन कर रहे श्री सुजीत कुमार, क्षेत्र सहायक ने सर्वप्रथम कार्यशाला में उपस्थित सभी कर्मचारियों का स्वागत किया। मुख्य अतिथि के लिए श्री स्वपेंद्र सिंह चौहान, सलाहकार (टीम लीडर) एवं श्री सुनील नवल महाजन, स्काडा विशेषज्ञ को आमंत्रित किया गया। परियोजना में कुछ नई नियुक्तियां होने के कारण सभी अधिकारियों वं कर्मचारियों ने संक्षेप में अपना-अपना परिचय दिया।

इस अवसर पर परियोजना प्रबंधक श्री विनीत कुमार ने राजभाषा नीति, राजभाषा संबंधित संवैधानिक प्रावधानों पर प्रकाश डाला। साथ ही साथ राजभाषा नीति के अनुपालन के लिए वाप्कोस लखनऊ कार्यालय की कार्ययोजना एवं इसके अनुपालन में सभी की भूमिकाओं से भी सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को पुनः अवगत कराया। इसके अलावा उन्होंने राजभाषा

नीति, पत्राचार के विभिन्न रूपों, जैसे कार्यालय परिपत्र, टिप्पणी, ज्ञापन, आदेश एवं व्यावहारिक व्याकरणिक समस्याओं व उनका समाधान तथा राजभाषा नीति के प्रमुख बिन्दुओं पर चर्चा करते हुए कुछ हिंदी से संबंधित सामान्य ज्ञान के प्रश्न पूछे जिसका सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बहुत उत्साहित होकर उत्तर दिया। कार्यशाला में उपस्थित सभी कार्मिकों ने हिंदी को बढ़ावा देने पर दृढ़तापूर्वक सहमति जताई एवं अपने अनुभव भी साझा किया। इसके अलावा कुछ कार्मिकों ने हिंदी के बारे में कुछ नियमों को लेकर भ्रम के विषय में भी चर्चा की।

कार्यशाला बहुत ही उपयोगी एवं उद्देश्यपूर्ण रही। कार्यक्रम का समापन अतिथियों एवं प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित कर किया गया।

अपर इंद्रावती पंप स्टोरेज परियोजना

भारत एक तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है जो तेजी से औद्योगिकरण, सिंचाई विकास, शहरीकरण, बेहतर ग्रामीण बुनियादी ढांचे आदि का अनुभव कर रही है। बिजली की मांग जो किसी देश के आर्थिक विकास के लिए बुनियादी आदानों में से एक है, इसलिए भारत में वृद्धि हो रही है। बिजली के उत्पादन के लिए उपयोग किए जाने वाले ऊर्जा के मुख्य स्रोत हैं: सभी रूपों में ईंधन यानी ठोस, तरल और गैसीय, जल ऊर्जा और परमाणु ऊर्जा। ऊर्जा के अन्य स्रोत सूर्य (सौर फोटो-वोल्टाइक आदि), हवा और ज्वार हैं। जल-विद्युत ऊर्जा का एक नवीकरणीय, किफायती, गैर-प्रदूषणकारी और पर्यावरण के अनुकूल स्रोत है। भारत सरकार (जीओआई) ने वर्ष 2022 तक 175 गीगावाट (पवन से 60 गीगावाट, जैव ऊर्जा के 10 गीगावाट और लघु जल विद्युत से 5 गीगावाट) नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता स्थापित करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है, जिसमें सौर से 100 गीगावाट शामिल है। आखिरकार, अक्षय ऊर्जा संसाधनों से लक्षित नियोजित संस्थापन वर्ष 2030 तक 450 गीगावॉट निर्धारित किया गया है।

सौर, पवन और गैर-पारंपरिक ऊर्जा जैसे अक्षय स्रोतों से उत्पादन आंशिक रूप से, यानी मौसमी या रूक-रूक कर एक दिन में उपलब्ध होगा और पूरे दिन/वर्ष में ऊर्जा/बिजली की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पूरी तरह से भरोसा नहीं किया जा सकता है। साथ ही, इसके परिणामस्वरूप ग्रिड स्थिरता के मुद्दे होंगे। इसलिए, नवीकरणीय ऊर्जा के बड़े पैमाने पर परिवर्धन के लिए पीक उत्पादन अवधि के दौरान उत्पन्न अधिशेष ऊर्जा के भंडारण और मांग परिदृश्य के अनुसार रात/ऑफ-सीजन के दौरान इसका उपयोग करने के लिए एक उपयुक्त प्रणाली के कार्यान्वयन की आवश्यकता होती है। वर्तमान में, ग्रिड स्थिरता सुनिश्चित करने तथा आवश्यक ऊर्जा भंडारण की सुविधा के लिए राज्य में कोई तंत्र/ऊर्जा भंडारण प्रणाली उपलब्ध नहीं है।

पम्प्ड स्टोरेज प्रोजेक्ट एक प्रकार का जलविद्युत उत्पादन संयंत्र है। जो पानी के रूप में ऊर्जा का भंडारण करता है, कम ऊंचाई वाले जलाशय से ऑफ-पीक अवधि के दौरान ऊपरी ऊंचाई वाले जलाशय में पंप किया जाता है और पीक अवधि के दौरान बिजली उत्पन्न करता है। यह पानी के रूप में संग्रहीत संभावित ऊर्जा वाली बैटरी की तरह है। यह वर्तमान में बड़ी मात्रा में विद्युत ऊर्जा के भंडारण के सबसे प्रभावी साधनों में से एक है। पंप की गई भंडारण परियोजनाओं में बिजली व्यवस्था की विश्वसनीयता में सुधार करने और चरम मांग को पूरा करने और लंबे समय तक उपयोगी जीवन और दुर्लभ जीवाश्म ईंधन के संरक्षण में मदद करने के लिए तत्काल शुरू और रोकने की अंतर्निहित क्षमता है। यह ग्रिड स्थिरता, विश्वसनीय आपूर्ति और गुणवत्तापूर्ण बिजली (वोल्टेज और आवृत्ति के संदर्भ में) प्रदान करने में मदद करता है। पम्प्ड स्टोरेज हाइड्रो-इलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट्स (पीएसएचईपी), दुनिया की 'हाइड्रो बैटरी', स्थापित वैश्विक ऊर्जा भंडारण क्षमता का 94% से अधिक है।

किसी भी विशिष्ट पीएसपी में ऊपरी जलाशय का पानी जलमार्ग से होकर बिजली घर में स्थापित टर्बाईनों तक जाता है ताकि पीक आवर्स के दौरान बिजली पैदा

की जा सके। बिजली उत्पन्न करने के पश्चात इसी पानी को निचले स्तर के जलाशय में भंडारण के लिए सुरंग के माध्यम से मोड़ दिया जाता है। ऑफ पीक ऑवर्स के दौरान थर्मल स्टेशनों और अन्य नवीकरणीय स्रोतों से अतिरिक्त बिजली को पावर हाउस के माध्यम से निचले जलाशय से ऊपरी जलाशय में इसी पानी की समान मात्रा में पंप टर्बाइन (पंपिंग मोड में) से पंप किया जाता है। पीक और लीन अवधि के दौरान ऑपरेशन का वही चक्र दोहराया जाता है। यही पंप ऊर्जा भंडारण योजना का मूल सिद्धांत है।

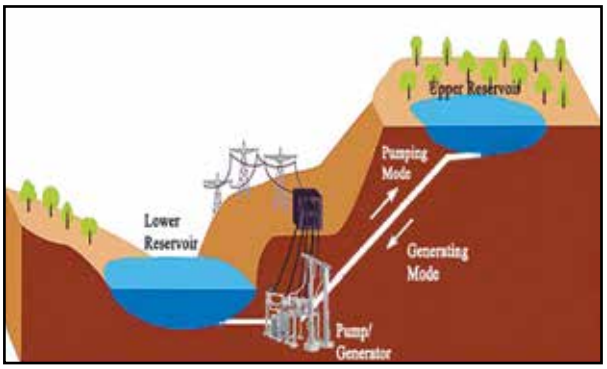

भारत सरकार के उपक्रम **वाप्कोस लिमिटेड का जलविद्युत प्रभाग,** ओडिशा राज्य के कालाहांडी जिले के मुखीगुड़ा गांव के नजदीक अपर इंद्रावती पंप स्टोरेज परियोजना के लिए विस्तृत रिपोर्ट तैयार करने में शामिल है।

प्रस्तावित अपर इंद्रावती पंप स्टोरेज हाइड्रो प्लांट (600 MW) ऊर्जा भंडारण के रूप में सुविधा प्रदान करेगा। यह परियोजना ओडिशा राज्य के कालाहांडी जिले के मुखीगुड़ा गांव के नजदीक प्रस्तावित है। अपर इंद्रावती पंप स्टोरेज परियोजना में 1455.76 MCM की लाइव स्टोरेज क्षमता वाला मौजूदा जलाशय ऊपरी जलाशय के रूप में कार्य करेगा एवं 4.0 MCM क्षमता वाला प्रस्तावित जलाशय निचले स्तर के जलाशय के रूप में कार्य करेगा। मौजूदा अपर इंद्रावती जलाशय का पूर्ण जलाशय स्तर EL. 642 m पर है और मृत भंडारण स्तर El.625 m पर है। प्रस्तावित निचले जलाशय का पूर्ण जलाशय स्तर EL. 300 m और मृत भंडारण स्तर El. 285 m प्रस्तावित है। इस परियोजना में एक एचआरटी, दो प्रेशर शाफ्ट, एक भूमिगत बिजलीघर (यूजीपीएच) और एक टीआरटी के निर्माण की परिकल्पना की गई है। यह परियोजना 335 मीटर रेटेड हेड का उपयोग करके 600 मेगावाट बिजली पैदा करेगी। उपयोग किया गया पानी गैर-उपभोग्य प्रकार का है और केवल ऊपरी और निचले जलाशय के बीच उत्पादन और पंपिंग के प्रत्येक लूप के लिए पुनर्नवीनीकरण किया जाता है। वर्तमान योजन के लिए 5 घंटे की पीक अवधि के दौरान और 6.17 घंटे ऑफ पीक अवधि के दौरान प्रस्तावित किया गया है। इस हाइड्रो पावर प्लांट में 4×150MW वर्टिकल एक्सिस प्रतिवर्ती प्रकार की हाइड्रो-इलेक्ट्रिक इकाइयों से लैस करने का प्रस्ताव है। प्रत्येक यूनिट में एक जनरेटर-मोटर और एक पंप टरबाइन प्रस्तावित है। भूमिगत पावर हाउस मुखीगुडा गांव के जनदीक तलहटी में है। मौजूदा 220/400 केवी ट्रांसमिशन सिस्टम बिजली उत्पन्न की निकासी एवम् पंपिंग मोड के दौरान बिजली की आपूर्ति के लिए इस प्रस्तावित बिजली संयंत्र द्वारा उपयोग किए जाने का प्रस्ताव है।

प्रस्तावित अपर इंद्रावती पंप स्टोरेज परियोजना योजना के बारे में संक्षिप्त जानकारी

स्थापित क्षमता (मेगावाट)	600 मेगावाट
इकाइयों की संख्या	4 नं.
इकाई आकार (मेगावाट)	150 मेगावाट
नेट रेटेड हेड इन जेनरेशन (मीटर)	335 मी.
पीकिंग ऑपरेशन के घंटे	5 घंटे 00 मिनट
वार्षिक ऊर्जा उत्पादन (गीगा वाट घंटा)	1040 गीगा वाट घंटा
वार्षिक पंम्पिंग ऊर्जा (गीगा वाट घंटा)	1283 गीगा वाट घंटा
साइकिल दक्षता	81%
कुल परियोजना लागत (आईडीसी सहित)	2978 करोड़

–संगीता झा
प्रबन्धक (का. एवं प्रशा.)
एवं
–दीपक यादव
अभियन्ता
हाइड्रो पावर

मॉनीटरिंग, इवैल्यूएशन, लर्निंग एंड डेवलपमेंट (एम ई एल एंड डी) प्रोजेक्ट

2009-2010 से वाटरशेड घटक के तहत वाटरशेड के आधार पर वर्षा आधारित क्षेत्रों में वांछित ग्रामीण समृद्धि प्राप्त करने के लिए भारत सरकार द्वारा "हर खेत को पानी" दृष्टि से "प्रधान मंत्री कृषि सिंचाई योजना (पी एम के एस वाई)" कार्यक्रम लागू किया गया। राज्य स्तरीय नोडल एजेंसी (एस एल एन ए) के माध्यम से आंध्र प्रदेश राज्य में पंचायत राज और ग्रामीण विकास विभाग द्वारा इस वाटरशेड कार्यक्रम को लागू किया गया।

इस परियोजना के तहत जल संचयन संरचनाएं, रिज क्षेत्र उपचार, जल निकासी लाइन उपचार, मिट्टी और नमी संरक्षण, नर्सरी उगाना, वनरोपण, बागवानी, चारागाह विकास, संपत्ति-कम व्यक्तियों के लिए आजीविका गतिविधियों, उत्पादन प्रणाली तथा छोटे और सीमांत किसानों के लिए सूक्ष्म उद्यम आदि में प्रभावी वर्षा प्रबंधन जैसे फील्ड बंडिंग, कंटूर बंडिंग/ट्रेंचिंग, स्टैगर्ड ट्रेंचिंग, भूमि समतलन, पलवार आदि किया जायेगा।

आंध्र प्रदेश में श्रीकाकुलम, विजयनगरम, विशाखापत्तनम, पूर्वी गोदावरी और पश्चिम गोदावरी नामक 5 जिलों की मॉनिटरिंग का कार्य वाप्कोस लिमिटेड को दिया गया। इसमें कुल 66 परियोजनायें और 2101 माइक्रो वाटरशेड हैं। वाटरशेड कार्यक्रम की अवधि 3 चरणों के साथ 4-7 वर्ष है।

1) **प्रिपरेटरी फेज- अवधि 1 - 2 वर्ष।**

इस चरण का मुख्य उद्देश्य सहभागी दृष्टिकोण को अपनाने के लिए उपयुक्त तंत्र का निर्माण करना है।

कुछ एंट्री पॉइंट गतिविधियाँ जो की गईं:-

सोलर स्ट्रीट लाइट, तौल मशीन, आर ओ प्लांट की स्थापना, पानी के भंडारण टैंक, सीमेंट के पानी के कुंड, पाइपलाइन, टेंट हाउस, स्कूल बेंच आदि।

2) **वर्क्स फेज - 2-3 वर्ष।**

इस चरण का उद्देश्य प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, जल और मृदा संरक्षण कार्य, उत्पादन प्रणाली में सुधार और आजीविका सुधार गतिविधियों को अंजाम देना है।

इस चरण के तहत चेक डैम, खेत के तालाब और पेरकोलेशन टैंक बनाए गए, जिनसे किसानों को लगभग 5000/- रुपये प्रति एकड़ से अधिक आय के साथ फसलों में अधिक उपज की वृद्धि यानी लगभग 8-10 क्विंटल प्रति एकड़ प्राप्त होती है। सागौन जैसे ब्लॉक वृक्षारोपण और बंड वृक्षारोपण, सूखी भूमि बागवानी जैसे काजू और आम, एवेन्यू वृक्षारोपण किया जाता है। किसानों को खेती की अन्य सुविधाएं प्रदान की गईं। गरीब

श्रीकाकुलम में चेक डैम

मवेशियों के लिए पेयजल कुंड

थ्रेशिंग फ्लोर

गुरुत्वाकर्षण प्रवाह पेयजल आपूर्ति

ढीली बोल्डर संरचनाएं

डाटा संग्रह के लिए बैठक

लोगों और महिलाओं को उनकी आजीविका में सुधार लाने के मकसद से ब्याज मुक्त ऋण प्रदान किया जाता है।

3) कंसोलिडेशन फेज- अंतिम चरण।

अध्ययन का मुख्य उद्देश्य विशेष कार्य बैच के दौरान कार्यान्वित 'पी एम के एस वाई' -वाटरशेड कार्यक्रमों के प्रभाव का मूल्यांकन करना है।

वाप्कोस द्वारा राज्य स्तरीय नोडल एजेंसी (एस एल एन ए) को निम्नलिखित रिपोर्ट प्रस्तुत की जाती हैं:

- **जिला स्तरीय कार्यशाला रिपोर्ट:-**

  मूल्यांकन प्रक्रिया शुरू करने से पहले, प्रत्येक जिले में लाइन विभागों के प्रमुखों, संबद्ध क्षेत्रों, जिला जल प्रबंधन एजेंसी (डी डब्ल्यू एम् ए) और 'एस एल एन ए' अधिकारियों के साथ वाप्कोस कर्मचारियों की हर साल एक कार्यशाला आयोजित की जाती है। इस रिपोर्ट में आयोजित कार्यशाला का विवरण शामिल है।

- **सामाजिक-आर्थिक प्रभाव मूल्यांकन रिपोर्ट।**

  परियोजना क्षेत्र में लाभार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार का विवरण इस रिपोर्ट में होता है। 'डी ओ एल आर' दिशानिर्देशों के अनुसार, सामाजिक-आर्थिक प्रभाव आकलन के लिए 5% परिवारों के नमूने का चयन किया जाएगा।

- **सैटेलाइट इमेजरी रिमोट सेंसिंग और जी आई एस विश्लेषण रिपोर्ट।**

  इस रिपोर्ट में वाटरशेड क्षेत्रों में होने वाले जैव-भौतिक परिवर्तन शामिल हैं। वाटरशेड विकास कार्यक्रमों की पहचान करने के लिए 'ई आर डी ए एस' इमेजिंग और 'आर्क जी आई एस' टूल्स का उपयोग करके विभिन्न वाटरशेड घटकों का मूल्यांकन किया जाता है।

- **भूमि संसाधन विभाग (डी ओ एल आर) प्रारूप।**

  'डी ओ एल आर' द्वारा तैयार और संप्रेषित प्रारूप, जिसे 23 मापदंडों के पूर्व और बाद के मूल्यों के साथ भरना होता है।

- **सफलता की कहानियां (अंग्रेजी और तेलुगु)**

  रिपोर्ट में परियोजना की विभिन्न गतिविधियों से लाभार्थियों की सफलता की कहानियों का संग्रह शामिल है और रिपोर्ट अंग्रेजी और तेलुगु भाषाओं में तैयार की जाएगी।

- **परियोजना गतिविधियों का वीडियो प्रलेखन**

  परियोजना क्षेत्र में विकास का दृश्य।

- **विषयगत अध्ययन और केस स्टडीज**

  रिपोर्ट का विषय परियोजना क्षेत्र में की गई विभिन्न गतिविधियों के विकास को दर्शाता है।

प्रति चार बैचों में, प्रत्येक बैच के लिए चार जर्नल्स प्रकाशित किए जाते हैं। 5.5 से अधिक 'एन ए ए सी' रेटिंग के साथ विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशकों में अब तक 16 जर्नल लेख प्रकाशित किए गए हैं।

वाटरशेड परियोजनाएं लाभार्थियों की आजीविका और महत्वपूर्ण फसलों की उत्पादकता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और इस प्रकार किसानों की आय को दोगुना करने में अधिकतम मदद करती हैं।

– सी.एच. उदयश्री
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर,
हैदराबाद कार्यालय

नारी शिक्षा

मानव जीवन की कुछ ऐसी आवश्यकताएं हैं जिनके बिना सुखमय जीवन व्यतीत करना बहुत कठिन है। उन्हीं आवश्यकताओं में से एक है "शिक्षा"।

आज का युग शिक्षा का युग है और यह युग केवल पुरूष का नहीं बल्कि नारी का भी युग है। नारी शिक्षा से ही एक विकसित देश का निर्माण हो सकता है। आज के युग में नारी कितनी ही सदाचारी और सभ्य क्यों न हों, अगर वह शिक्षित नहीं है तो उस की विशेषताओं व गुणों का कोई मोल नहीं है। नारी का पढ़ना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि पढ़ने से वो सिर्फ अपना ही नहीं बल्कि अपने परिवार, समाज तथा देश का विकास कर सकती है।

नारी और पुरुष दोनों ही समाज रूपी वाहन के दो पहिए हैं। अगर इनमें से एक पहिया भी खराब होता है तो समाज पर इसका गहरा प्रभाव पड़ता है। इसलिए दोनों का समान रूप से शिक्षित होना जरूरी है। कहते हैं एक आदमी को शिक्षित करके केवल राष्ट्र का कुछ हिस्सा ही शिक्षित किया जा सकता है जबकि एक नारी को शिक्षित करके पूरे देश को शिक्षित किया जा सकता है।

आज भी कई लोग नारी की उपेक्षा करते हैं व उन्हें तुच्छ समझते हैं। इस सोच का कारण यह है कि

हमने अपने संस्कार, संस्कृति, शास्त्र आदि को भुला दिया है जिसमें नारी को लक्ष्मी, सरस्वती तथा काली का रूप बताया गया है अर्थात् नारी धन, विद्या तथा शक्ति तीनों प्राप्त करने में सक्षम है। नारी मार्गदर्शन व परम मित्र की प्रतिभूति है। नारी परिवार की निस्वार्थ सच्ची सेवा, माता के समान जीवन देने वाली तथा रक्षा करने वाली व धर्म के अनुकूल कार्य करने वाली है।

नारी शिक्षा का महत्व निर्विवाद है। यह बिना किसी तर्क या विचार के ही स्वीकार करने योग्य है, क्योंकि पुरुष के समान नारी भी आदर और सम्मान की पात्र है। शिक्षा नारी में आत्मनिर्भरता का गुण उत्पन्न करती है जिसके फलस्वरूप वह अपनी प्रतिभा और शक्ति, कार्यकुशलता तथा अद्भुत क्षमता से किसी भी महत्वूपर्ण पद को हासिल करके अपने कार्य एवं जीवन का निर्वाह कर सकती है।

"ज्ञान से जो मूरत गढ़ी जाती है,
वो पूरी दुनिया में पूजी जाती है।"

यह कहना गलत नहीं कि आज सरकार नारी शिक्षा को लेकर बहुत सचेत है और इसे बढ़ावा देने के लिए बहुत सी योजनाएं भी लागू कर रही है। ताकि आज की नारी अपने पैरों पर खड़ी हो सके और अपनी शिक्षा के तेज प्रकाश से समाज को भी प्रकाशित कर सके।

अंत: यह कहा जा सकता है कि नारी की शिक्षा को अब अनुपयोगी नहीं समझा जा सकता। वैसे तो स्वतंत्र भारत में भारतीय जनमानस की विचारधारा में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिला है, शिक्षा के क्षेत्र में भी नारी की स्थिति में अभूतपूर्व सुधार देखने को मिला है। अधिकांश क्षेत्रों में नारी की स्थिति बेहतर है किन्तु सदियों की परम्पराओं तथा सोच को कुछ दिनों या महीनों में नहीं बदला जा सकता। इसके लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है। यह हर माता-पिता की जिम्मेदारी है कि वे सुनिश्चित करें कि उनकी बेटी अनिवार्य रूप से विद्यालय जाए और शिक्षा ग्रहण करे। शिक्षा न केवल उन्हें उनकी गृहस्थी चलाने में, बल्कि राष्ट्र को भी मजबूत बनाने में मदद करेगी। एक समृद्ध एक महान देश के लिए हम सभी को नारी शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए और इसके प्रति लोगों को जागरूक करना चाहिए। "हर एक नारी को शिक्षित करना बहुत जरूरी है।"

– जिमी निरोला
उप प्रबंधक
वाप्कोस लिमिटेड
चण्डीगढ़ कार्यालय

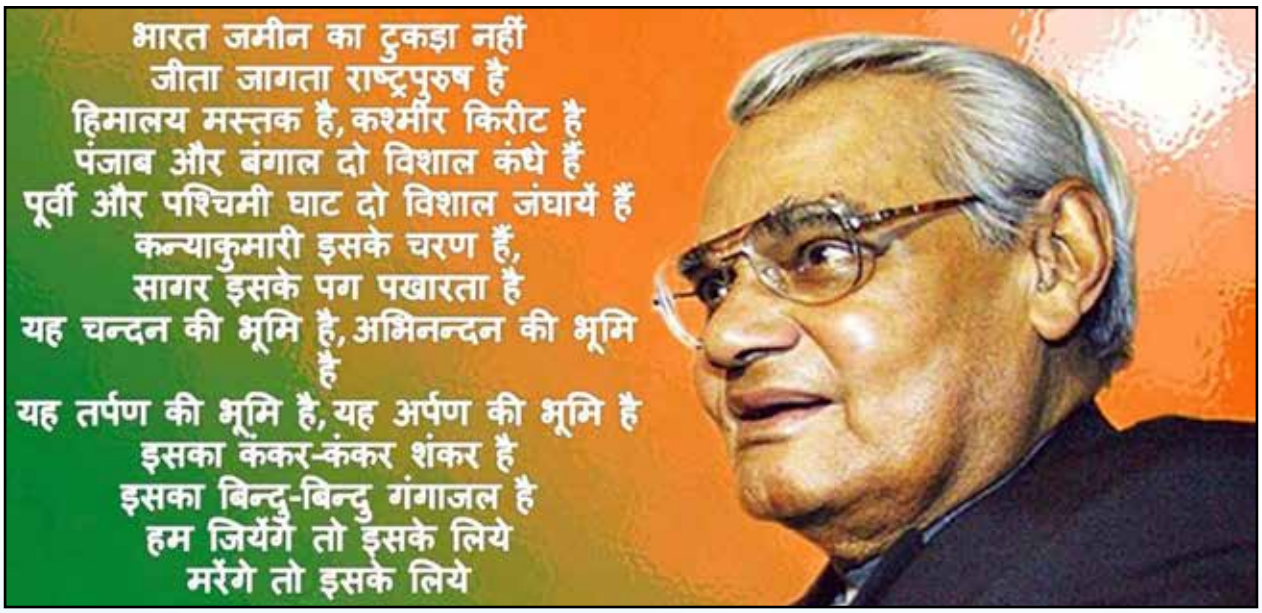

जल जीवन मिशन

भारत में पेयजल के इतिहास में यह पहली बार हुआ कि -15 अगस्त, 2019 को भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा लाल किले के प्राचीर से देश के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रत्येक घर को निर्धारित मापदण्ड एवं गुणवत्ता पूर्ण निरोगात्मक, पेयजल-सुचारु समयबद्ध तरीके से ग्रामीणों को उपलब्ध कराने वाली घरेलू नल जल कनेक्शन योजना की घोषणा की गई प्रधान मंत्री जी का सपना है कि पीने का शुद्ध जल **"नल से जल"** हमारे देशवासियों को मिलना चाहिये।

राज्य सरकारों के साथ मिलकर इसे वर्ष 2024 तक पूरा किया जायेगा 15.70 करोड़ घरों को इस मिशन के अन्तर्गत घर में पेयजल के लिये कनेक्शन दिया जाना है जिसे प्रतिव्यक्ति प्रतिदिन 55 लीटर उपलब्ध कराने का प्रावधान किया गया है। यह परियोजना भारतीय संविधान के 73वें संसोधन को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई है। परियोजना का निधार्रण ग्राम स्तर से किया जाना है इसमें गांव के लोगों की भागीदारी सुनिश्चित है। यह योजना भारत सरकार एवं राज्य सरकारों के सहयोग से देश के प्रत्येक ग्राम में हर घर के लिये चलाई जा रही है। इस मिशन का मुख्य उद्देश्य हर घर जल पहुंचाने का है। अपने गांव में योजना लागू करने के लिये ग्राम पंचायतों द्वारा अपनी आवश्यकता के अनुसार कार्य योजनाएं बनाई गई हैं। इस परियोजना के माध्यम से प्रत्येक घर को एक कार्यशील घरेलू नल कनेक्शन के माध्यम से स्वच्छ जल उपलब्ध कराया जा रहा है, एवं कराया जायेगा। योजनाएं अन्तिम रुप से प्रगतिरत है।

जल पाइप लाइन, जल संचयन, प्रचालन एवं रख-रखाव के कार्य पर निर्णय स्वयं लोगों द्वारा लिया जाएगा स्वास्थ की समास्याओं का समाधान भी शुद्ध पीने के जल से जुड़ा होता है अर्थव्यवस्था में भी उसका बहुत बढ़ा योगदान होता है इसी उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए जल जीवन मिशन शुरू किया गया है। दूर-दराज के ग्रामीण अंचलों, जंगलों में रहने वाले हमारे अदिवासियों के घरों तक जल पहुंचाने का कार्य का बड़ा अभियान चलाया गया है।

पिछले 6 वर्षों में विभिन्न क्षेत्रों में कार्य हुए हैं जैसे सड़क, घर, शौचालय, गैस, बिजली, बैंकखाता, स्वास्थ्य, बीमा पेंशन ऐसी अनेक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये निरन्तर प्रयास जारी किया गया है।

"हर घर" में स्वच्छ और पर्याप्त पानी एक ऐसी ही मूलभूत आवश्यकता है। इस योजना में मानवीय दृष्टिकोण को दृष्टिगत रखते हुए पानी की कमी से सबसे अधिक पीड़ा महिलाओं को होती है, का ध्यान रखा गया है पानी के संकलन में उन्हें काफी समय लगता था। जिसका असर परिवार की आर्थिक स्थिति पर भी पड़ता था। अब इस योजना का प्रभावी प्रावधान भी हमारी मां बहन कर सकती है। ग्राम की महिलाओं की भागीदारी जहां जल जीवन मिशन की सफलता की कुंजी है। वहीं उपलब्ध पानी का कुशल प्रबंधन लम्बे समय तक पानी मिलने की गारंटी है।

हमें अपने भरोसे मंद पानी स्रोत प्रदूषण रहित रखे जाने की आवश्यकता के अनुसार ही पेयजल खर्च करना है। हम पानी का संचयन करें, चूंकि हम पानी बना तो नहीं सकते पर बचा जरुर सकते हैं। स्वच्छ हवा के बाद शुद्ध जल सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। आओ हम मोदी जी के नये भारत के संकल्प को सिद्ध करें।

– के.पी. झारिया
वाप्कोस लिमिटेड, भोपाल कार्यालय

पर्यावरण का संरक्षण

नवयुग की गतिविधियों के संग जीवन भी सरल सुगम बनाना है,
एक-दूजे पर छोड़ दिया, भूल गए इसे बचाना है।
जिन वृक्षों ने तुमको साँसे दी उनको भी लगाना है,
कमी हुई जब ऑक्सीजन की, अब कैसा अफसाना है।

नवयुग की गतिविधियों के संग जीवन भी सरल सुगम बनाना है...
शहरीकरण के जाल में फंसकर, पक्के जंगल बिछा दिए,
कमी हुई जब मृदा अन्तःस्यदन दर, वर्षा जल भी बचा न सकें,
जिस पानी से जीवन चलता उसका संरक्षण भी भूल गए,
उत्पन्न हुआ जब भारी जल संकट, अब कैसा अफसाना है ...

नवयुग की गतिविधियों के संग जीवन भी सरल सुगम बनाना है ...
सुख-सुविधाओं पर आश्रित होकर, प्रदूषण का स्तर बढ़ा लिया,
जहर घोलकर संसाधन से वायु गुणवत्ता को घटा लिया,
इस बढ़ते विकास की आँधी में परिस्थितिकी तंत्र को बचाना भूल गए,
विलुप्त हुई जब जैव विविधता, अब कैसा समझाना है ...

नवयुग की गतिविधियों के संग जीवन भी सरल सुगम बनाना है ...
आओ संग मिल हम प्रण करें ...
पर्यावरण को दूषित होने से बचा स्वच्छ रखें ।

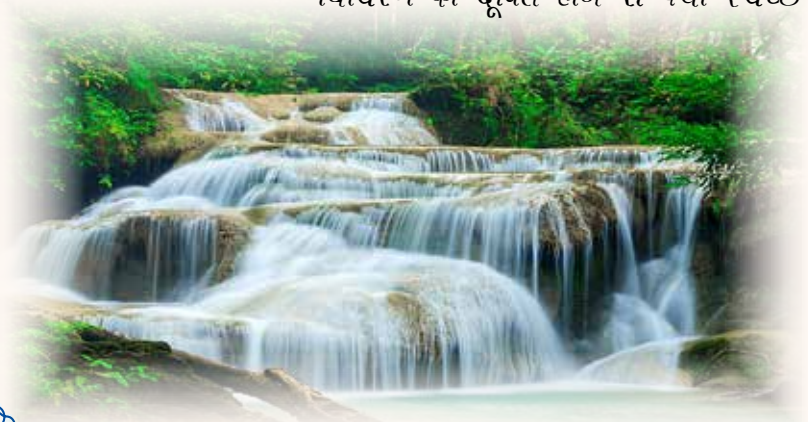

-पूजा कुमारी
डी.ई.ओ.
अवस्थापना विकास

26 जनवरी के उपलक्ष्य में बच्चे के मुख से प्रस्तुत की गई कविता

तीन रंग से बना तिरंगा, नभ में जब फहराए ।
गर्व करें तब अंग अपना, सिर ऊंचा हो जाये ।।

रंग केसरी बलिदानों का, देश प्रेम का अलख जगाये ।
श्वेत रंग यह अमन चैन का, शांति का संदेश सुनाएं ।।

खुशहाली का रंग हरा यह, हर घर में समृद्धि लाएं ।
मध्य बना यह अशोक चक्र, धर्म चक्र कहलाए ।।

सच्चाई की राह पर चलना, यह हमको सिखलाए ।
अखंडता की पहचान तिरंगा, जग में शान बढ़ाये ।।

(श्लोक गेहानी)

– पुत्र श्री राजेश गेहानी
उप मुख्य अभियन्ता
भोपाल कार्यालय

कभी माँ को भी ये घर मायका सा लगने दो

ठीक है, ये उसका घर है।
उसी का घर है।
लेकिन फिर भी कभी माँ को ये घर,
मायका सा लगने दो।

जागने दो कभी उसे भी देर से
नल आने का समय हो या बाई छुट्टी पर हो।
छोटी-छोटी समस्याओं से उसे भी कभी मुक्ति दो।
कभी माँ को भी ये घर, मायका-सा लगने दो।

आज बना लेने दो उसको सब्जी पसंद की अपनी।
अधिक नहीं, बस थोड़ी सी, मदद करो तुम उसकी।
उसकी पसंद और नापसंद पर ध्यान जरा तुम दो।
कभी माँ को ये घर, मायका-सा लगने दो।

कभी सुबह उसके लिए तुम चाय बना लो।
पास बैठ कर अपने मन की बात कभी कह लो।
कभी उसकी बाते भी ध्यान से सुन लो।
अपना बड्डपन उसे भी कभी महसूस होने दो।
कभी माँ को ये घर, मायका-सा लगने दो।

माँ को कभी आराम करने दो।
जिन हाथों ने प्यार से तुम्हें पाला,
कभी उन्हीं हाथों पर, अपना हाथ रख दो।
कभी माँ को भी ये घर, मायका-सा लगने दो।

-अंजलि कुमारी
कनि. सहायक
आंतरिक लेखा प्रभाग

हिम्मत

सर पर बांध कफन जुनून का
अपनी कश्ती खुद चला,
पर्वत ही देगा रास्ता तुझको
शिखर पर जाने का जरिया तो दिखा ।
समंदर ही ले जाएगा पार तुझको
लहरों से तू ना घबरा ।।

सर पर बांध कफन जुनून का
अपने होंसलों को बढ़ा,
चांद ही देगा रोशनी तुझको
अमावस का तू डर मिटा।
सूरज ही पहनाएगा ताज तुझको
चमकती धूप में नजरों को ना झुका ।।

सर पर बांध कफन जुनून का
अपनी हिम्मत को दे जगा,
ये वृक्ष ही बिठाएँगे छाँव में अपनी
बस बंजर माटी को तू सींचता जा।
ये हवायें ही ले चलेंगी सही दिशा
आँधी में चलने से ना हिचकिचा ।।

सर पर बांध कफन जुनून का
चल विजयी पताका फिर लहरा,
नतमस्तक हो जाए ये धरती और नीलगगन
हार को ऐसे दे तू झुका ।
कामयाबी की मशाल ऐसी जला
इतिहास भी लिख दे गवाही तेरे नाम की
ऐसे अमर शब्द की याद बन जा ।।

सर पर बांध कफन जुनून का
बस चलता जा तू चलता जा ।।

–निम्मी भारती
सहायक प्रबंधक
कार्मिक प्रभाग

पानी के बारे में कुछ रोचक तथ्य

1. दुनिया में 100% पानी में से 97.5% महासागरों में नमक के पानी के रुप में है, 2.5% ताजे पानी के रूप में है। यहां तक कि ताजे पानी में 68.9% बर्फ के रुप में है और भूजल में 29.9% मिट्टी की नमी के रूप में 0.9% और झीलों और नदियों में 0.3% है।

2. विश्व स्तर पर केवल 8% ताजे पानी का उपयोग घरेलू उद्देश्य के लिये किया जाता है जिसमें पीने और खाना पकाने का उद्देश्य शामिल है और 70% कृषि के लिये है।

3. यूनेस्को के अनुसार 1400 मिलियन क्यूबिक कि.मी. का कुल पानी पृथ्वी की सतह को 3 मीटर गहराई से पानी से ढ़कने के लिये काफी है।

4. प्रति व्यक्ति रोजाना पीने के पानी की जरुरत 2-4 लीटर होती है लेकिन एक व्यक्ति का एक दिन का खाना पैदा करने में 2000 से 5000 लीटर पानी लगता है।

–के.पी. झारिया
वाप्कोस लिमिटेड
भोपाल कार्यालय

हृदय की कोई भाषा नहीं है,
हृदय–हृदय से बातचीत करता है
और हिन्दी हृदय की भाषा है।

पेड़ के जीवन की कथा

आओ सुनाओ अपने जीवन की कथा
नाम है पेड़ दूर करता हूँ सब की व्यथा
कितना विशाल कितना घना हूँ
फल और फूलों से लदा हूँ
मेरी ही छाया में आकर
तुम अपनी थकान मिटाते हो।
मीठे फल और सुन्दर फूल
तुम मुझसे ही ले जाते हो
दूषित हवा तुम मुझको देकर
खुद प्राण वायु मुझसे पाते हो
अपने ही जीवन के आधार पर
तुम कुल्हाड़ी जब बरसाते हो
मुझसे ही मेरा सब कुछ लेकर
तुम दर्द मुझे दे जाते हो
देता हूँ बारिश का पानी
हरियाली मुझसे पाते हो
करता हूँ इतने उपकार
फिर भी सहता तुम्हारे अत्याचार।

– कन्ताली प्रसाद
फील्ड अटेन्डेंट
भोपाल कार्यालय

उदासी

मैं बहुत उदास हूँ, कुछ तो बात करो...
हो चुकी है रात, कुछ तो बात करो
मिलने का वायदा करके बिछड़ गए थे हम
बीत गए कई साल, कुछ तो बात करो...
देखता रहता हूँ राह तेरी रोज-दर-रोज
मिटती जा रही हर आस, कुछ तो बात करो...
छोड़ गए सभी साथी एक-एक करके
कोई नहीं है पास, कुछ तो बात करो...
पता है तुम भी बहुत खुश नहीं हो
कर लो थोड़ी हिम्मत, कुछ तो बात करो
करते-करते इंतजार बीत रही है जिन्दगी
छूट रही अब सांस, कुछ तो बात करो
टैक्नोलजी ने कर ली है इतनी तरक्की
उठा कर अपना फोन, कुछ तो बात करो...

– जिमी निरोला
उप प्रबंधक
वाप्कोस लिमिटेड
चण्डीगढ़ कार्यालय

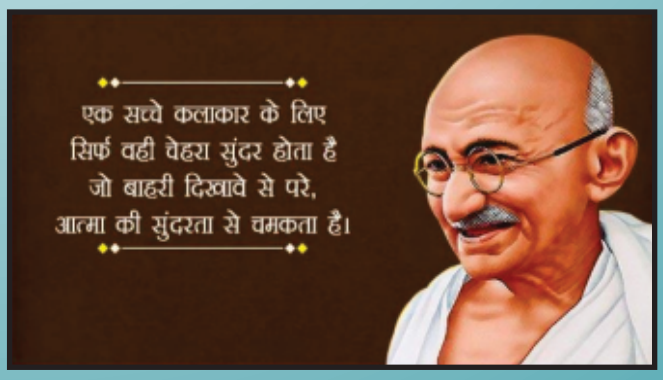

स्वच्छता शपथ

- महात्मा गांधी ने जिस भारत का सपना देखा था उसमें सिर्फ राजनैतिक आजादी ही नहीं थी, बल्कि एक स्वच्छ एवं विकसित देश की कल्पना भी थी।
- महात्मा गांधी ने गुलामी की जंजीरों को तोड़कर माँ भारती को आजाद कराया ।
- अब हमारा कर्तव्य है कि गंदगी को दूर करके भारत माता की सेवा करें।
- मैं शपथ लेता हूँ कि मैं स्वयं स्वच्छता के प्रति सजग रहूंगा और उसके लिए समय दूंगा।
- हर वर्ष १०० घंटे यानी हर सप्ताह २ घंटे श्रमदान करके स्वच्छता के इस संकल्प को चरितार्थ करूंगा।
- मैं न गंदगी करूंगा न किसी और को करने दूंगा।
- सबसे पहले मैं स्वयं से, मेरे परिवार से, मेरे मोहल्ले से, मेरे गांव से एवं मेरे कार्यस्थल से शुरूआत करूंगा ।
- मैं यह मानता हूँ कि दुनिया के जो भी देश स्वच्छ दिखते हैं उसका कारण यह है कि वहां के नागरिक गंदगी नहीं करते और न ही होने देते हैं।
- इस विचार के साथ मैं गांव-गांव और गली-गली स्वच्छ भारत मिशन का प्रचार करूंगा।
- मैं आज जो शपथ ले रहा हूँ, वह अन्य १०० व्यक्तियों से भी करवाऊंगा।
- वे भी मेरी तरह स्वच्छता के लिए १०० घंटे दें, मैं इसके लिए प्रयास करूंगा।
- मुझे मालूम है कि स्वच्छता की तरफ बढ़ाया गया मेरा एक कदम पूरे भारत देश को स्वच्छ बनाने में मदद करेगा।

ISO 9001:2015

वाप्कोस लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
जल शक्ति मंत्रालय
(A Government of India Undertaking)
Ministry of Jal Shakti

पंजीकृत कार्यालय : 5वां तल, "कैलाश", 26, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली - 110 001
दूरभाष : +91-11-23313131, 23313881 फैक्स : +91-11-23313134, 23314924 ई-मेल: ho@wapcos.co.in
निगमित कार्यालय : 76-सी, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर-18, गुरूग्राम-122015, हरियाणा
दूरभाष : +91-124-2399428 फैक्स : +91-124-2397392 ई-मेल: mail@wapcos.co.in
ई-मेल : hindi@wapcos.co.in वेबसाईट : http://www.wapcos.co.in